RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 5 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

jaivardhannews.com
जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका जून 2024

उम्मीदों का जनादेश

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

vedanta
HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India
विश्व की सबसे सस्टेनेबल कंपनी की ओर से आपको
विश्व पर्यावरण दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
एस एण्ड पी ग्लोबल कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी एसेसमेंट 2023* में नंबर 1
2.41 गुणा वाटर पॉज़िटिव
सालाना 110 हजार टन से ज्यादा कार्बन उत्सर्जन में कमी
2050 तक नेट जीरो उत्सर्जन के लिए एसबीटीआई लक्ष्य हेतु मान्य
ज़िंक की तरह ही आप भी हरियाली बढ़ाएं
Hindustan Zinc Limited Yashad Bhawan, Udaipur-313004 Rajasthan, India. T: +91 294 6604000-20 | www.hzlindia.com
www.linkedin.com/company/hindustanzinc
www.facebook.com/HindustanZinc
www.instagram.com/hindustan_zinc
www.twitter.com/hindustan_Zinc

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज,
सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशंचद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

सम्पादकीय

सबक

इस बात की कोई खुशी नहीं दोस्तों
कि कौन सत्ता में रहता है
और कौन सत्ता से जाता है
आज तो इस बात की खुशी मनाओ
कि मेरे देश की जनता को सबक देना
आता है
सबक भ्रष्टाचार पर
उनको भी दिया था
सबक महंगाई और बेरोजगारी पर
इनको भी दिया है
सरकार चाहे तुम कोई भी बनाओ
पर अब तो इस देश में खुशहाली
लाओ
बेरोजगारी और महंगाई मिटाओ
नफरत को हटा भाईचारा बढ़ाओ
वरना....!
अब तुम सबको सबक देने का
जनता ने संकल्प लिया है।

उक्त पंक्तियां मजबूत लोकतंत्र की बात कह रही है। इस तरह विपक्ष की मजबूती भी स्वस्थ लोकतंत्र के लिए जरूरी है। क्योंकि यह सरकार को जवाबदेही में रखती है। समय-समय पर, जब सत्ताधारी दल अपनी शक्ति का दुरुपयोग करता है या अनुचित नियंत्रण का दर्शन करता है, तो विपक्ष समाज की आवाज बनता है। विपक्ष के मौजूदा और गतिशील होने से, लोकतंत्र की बुनियादी ढांचा मजबूत होती है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकार के कार्यों का परिणामी विश्लेषण हो, जो समाज के हित में होता है। समाज में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक धाराओं के अभिव्यक्ति के लिए भी विपक्ष की महत्ता होती है। इसके माध्यम से लोग अपनी आपसी समझदारी का प्रदर्शन करते हैं, जो राष्ट्र को विकसित और संगठित बनाए रखने में मदद करता है। एक समर्थ विपक्ष, सरकार की कार्यशैली को जांचने, समीक्षा करने और संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। यह न केवल नीतियों के विपरीत मतों का प्रस्तुतिकरण करता है, बल्कि सार्वजनिक दलों की भूमिका को भी मजबूत करता है।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

देखिए, इस अंक में खास

1. कवर स्टोरी 1 : 33 साल बाद फिर वही जनादेश — पेज- 4
2. कवर स्टोरी 2 : महिमा कुमारी की प्रदेश की बड़ी जीत — पेज - 6
3. तीखी मिर्ची : चुनावी कार्यालय और मृत्यु की बैठक — पेज - 7
4. कवर स्टोरी : ये पब्लिक है, सब जानती है — पेज- 8
5. कवर स्टोरी : कांग्रेस का चुनाव चिह्न ही घोर अभिषाप ? — पेज - 9
6. कवर स्टोरी : जनता व जनप्रतिनिधि जनतंत्र की आत्मा है — पेज - 10
7. सवाल : जुमलो पर न्याय का हथोड़ा — पेज - 12
8. कविताएं : कथा में दो घंटे बाद, बिखरे ना परिवार हमारा — पेज - 14
9. सेवाभाव : गुमनाम फरिश्ता मंगल पांडे — पेज - 15
10. योग दिवस स्पेशल : योग रखे निरोग — पेज - 16
11. तीखी बात : जनता मालिक है, भिखारी नहीं — पेज - 19
12. मेरा गांव मेरे लोग : यादगार तकिया कलाम — पेज - 20
13. व्यंग्य : ईवीएम बदनाम होने से बच गई — पेज - 24
14. मेवाड़ी चौपाल : चालो लेण में, रेवो केण में — पेज - 26

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

राजसमंद जिले की खबरों से अपडेट रहने के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News

33 साल बाद फिर वही जनादेश

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के सबसे बड़े चुनाव में जनता ने चौंकाने वाले परिणाम दिए। लोकसभा चुनाव में आए जनादेश ने सारे अनुमानों को ध्वस्त कर दिया। रुझानों में भाजपा 250 तक भी नहीं पहुंच पाई। आखिरी नतीजे में भी एनडीए के सहयोगी दलों के साथ 290 के आस पास ही रही। 33 साल बाद जनता दोबारा वहीं परिणाम दिए हैं। लोकसभा चुनाव को लेकर जनादेश को लेकर कई मायने है, जिसे समझने के लिए 10 बातों को दिए, जिससे आपकी सारी शंकाओं का समाधान हो जाएगा और जनादेश भी स्पष्ट हो जाएगा।

इस जनादेश के क्या मायने हैं

- एनडीए को 400 पार और पार्टी को 370 पार ले जाने की भाजपा की रणनीति कामयाब नहीं हो पाई।
- जनादेश ने साफ कर दिया कि सिर्फ प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे के भरोसे रहने से भाजपा का काम नहीं चलेगा। उसके निर्वाचित सांसदों और राज्य के नेतृत्व को भी अच्छा प्रदर्शन करना होगा।
- जनादेश बताता है कि गठबंधन की अहमियत का दौर 10 साल बाद फिर लौट आया है। भाजपा के पास अकेले के बूते अब वह आंकड़ा नहीं है, जिसके सहारे वह अपना एजेंडा आगे बढ़ा सके।
- एग्जिट पोल्स की भी हवा निकल गई। 11 एग्जिट पोल्स में एनडीए को 340 से ज्यादा सीटें मिलने का अनुमान लगाया था। तीन सर्वेक्षणों में तो एनडीए को 400 लोकसभा सीटें मिलने का अनुमान था। रुझानों/नतीजों में एनडीए उससे तकरीबन 100 सीट पीछे है।

क्या इसे सत्ता विरोधी लहर कहेंगे?

- 1999 में 182 सीटें जीतने वाली भाजपा जब 2004 में 138 सीटों पर आ गई तो उसने सत्ता गंवा दी। उसके पास स्पष्ट बहुमत 1999 में भी नहीं था और उससे पहले भी नहीं था। फिर भी यह माना गया कि जनादेश भाजपा के 'फील गुड फैक्टर' के विरोध में था।
- 2004 में भाजपा से महज सात सीटें ज्यादा यानी 145 सीटें जीतकर कांग्रेस ने यूपीए की सरकार बना ली। 2009 में कांग्रेस इससे बढ़कर 206 सीटों पर पहुंच गई, लेकिन 2014 में 44 पर सिमट गई। इसे स्पष्ट तौर पर यूपीए के लिए सत्ता विरोधी लहर माना गया।
- जब उत्तर प्रदेश जैसे सबसे अहम राज्य के नतीजे देखते हैं तो तस्वीर इस बार अलग नजर आती है। यहां भाजपा 34-35 सीटों पर सिमटती दिख रही है, जबकि 2014 में यहां भाजपा ने 71 और 2019 में 62 सीटें जीती थीं। सबसे बड़ा नुकसान भाजपा को इसी राज्य से हुआ है।

कम वोटिंग से घटी भाजपा की सीटें घटा ?

- वैसे तो इस बार लोकसभा चुनाव के शुरुआती छह चरण में ही पिछली बार के मुकाबले ढाई करोड़ से ज्यादा वोटरों ने मतदान किया था। फिर भी मतदान का प्रतिशत कम रहा।
- इसके ये मायने निकाले जा रहे हैं कि भाजपा अब की पार 400 पार के नारे में खुद ही उलझ गई। उसके वोट इसलिए नहीं बढ़े क्योंकि भाजपा को पसंद करने वाले वोटरों ने तेज गर्मी के बीच संभवतः खुद ही यह मान लिया कि इस बार भाजपा की जीत आसान रहने वाली है। इसलिए वोटरों का एक बड़ा तबका वोट देने के लिए निकला ही नहीं।

यह किसकी जीत और किसकी हार?

- यह भाजपा की स्पष्ट जीत नहीं है। यह एनडीए की जीत ज्यादा है। आंकड़ों की दोपहर तक की स्थिति को देखें तो यह माना जा सकता है कि पूरे पांच साल भाजपा गठबंधन के सहयोगियों खासकर जदयू

और तेदेपा के भरोसे रहेगी। इन दोनों दलों के बारे में यह कहना मुश्किल है कि ये भाजपा के साथ पूरे पांच साल बने रहेंगे या नहीं।

- राज्य के लिए विशेष पैकेज और केंद्र और प्रदेश की सत्ता में भागीदारी के मुद्दे पर इनके भाजपा से मतभेद के आसार ज्यादा रहेंगे। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू, दोनों ही अतीत में एनडीए से अलग हो चुके हैं।
- इंडी गठबंधन की बात करें तो यह उसकी स्पष्ट जीत कम और बड़ी कामयाबी ज्यादा है। यह गठबंधन 200 का आंकड़ा आसानी से पार कर रहा है। इसके ये सीधे तौर पर मायने हैं कि अगले पांच साल विपक्ष केंद्र की राजनीति में मजबूती से बना रहेगा। क्षेत्रीय दल देश की राजनीति में अपरिहार्य बने रहेंगे।

मुकाबला भाजपा बनाम विपक्ष था या...

- आंकड़ों की मानें तो इसका जवाब है हां, लेकिन इसका दूसरा जवाब यह भी है कि यह मुकाबला 2014 और 2019 में मोदी की लोकप्रियता बनाम 2024 में मोदी की लोकप्रियता का रहा।
- भाजपा ने नरेंद्र मोदी के चेहरे पर पहली बार 2014 का लोकसभा चुनाव लड़ा था।
- पहली बार में ही वह अकेले के बूते 282 सीटों पर पहुंची। 2019 में भाजपा ने 303 सीटें जीतीं। इस बार भाजपा की अपनी सीटें 240 के आसपास हैं।
- यानी वह 2014 से 40 सीटें और 2019 से 60 सीटें पीछे है।

क्या गठबंधन की राजनीति लौट रही है ?

- भाजपा को भले ही पांच साल तक आसानी से सरकार चला लेने का भरोसा हो, लेकिन उसकी निर्भरता जदयू और तेदेपा जैसे दलों पर रहेगी।
- भाजपा ने 10 साल स्पष्ट बहुमत से सरकार चलाई, लेकिन अब गठबंधन सरकार का दौर लौटेगा।

इस बार भाजपा सरकार किस स्थिति में रहेगी?

- डॉ. मनमोहन सिंह के समय कांग्रेस ने इससे भी कम सीटें लाकर गठबंधन की सरकार चलाई।
- अटल-आडवाणी भी भाजपा को अधिकतम 182 सीटों पर पहुंचा सके थे, लेकिन सरकार चला पाए। भाजपा की 2024 की स्थिति इससे बेहतर है।

जनादेश कब की याद दिलाता है ?

- नतीजे 1991 के लोकसभा चुनाव जैसे हैं। तब कांग्रेस ने 232 सीटें जीतीं और पीवी नरसिंहा राव प्रधानमंत्री बने।
- उन्होंने पूरे पांच साल अन्य दलों के समर्थन से सरकार चलाई। इस बार भाजपा भी 240 के आसपास है। गठबंधन अब उसकी मजबूरी है।

चुनाव किसके लिए उत्साहजनक हैं?

- इसके पीछे कई चेहरे हैं। जैसे राहुल गांधी। कांग्रेस 2014 में 44 और 2019 में 52 सीटों पर थी तो उन्हें जिम्मेदार माना गया।
- इस बार वह 100 सीटों के करीब है। यानी पिछली बार के मुकाबले लगभग दोगुनी सीटों पर वह जीत रही है।
- दूसरा बड़ा नाम है अखिलेश यादव। देशभर में भाजपा को सबसे बड़ा झटका सपा ने ही दिया है। सपा ने पिछली बार बसपा के साथ गठबंधन किया। बसपा को 10 सीटें मिली थीं, लेकिन सपा पांच ही सीटें जीत पाई थी। इस बार सपा ने कांग्रेस से हाथ मिलाया। वह 34 से ज्यादा सीटों पर जीत रही है।
- यह लोकसभा चुनावों में वोट शेयर के लिहाज से सपा का अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन हो सकता है। 2004 के लोकसभा चुनाव में उसे 35 सीटें मिली थीं। वहीं, वोट शेयर के लिहाज पार्टी का सबसे बेहतर प्रदर्शन 1998 में था जब उसे करीब 29 फीसदी वोट मिले थे। इस बार यह आंकड़ा 33 फीसदी से ज्यादा हो सकता है।
- तीसरा बड़ा नाम हैं चंद्रबाबू नायडू। उनकी तेदेपा आंध्र प्रदेश में सरकार बनने के करीब है और एनडीए के सबसे अहम घटक दलों में से एक रहेगी।
- ऐसा ही एक नाम उद्धव ठाकरे का है। यह उनके लिए अस्तित्व की लड़ाई थी। शिंदे गुट से ज्यादा सीटें जीतकर उद्धव ठाकरे यह कहने की स्थिति में होंगे कि उनकी शिवसेना ही असली शिवसेना है।

इस बार क्या रिकॉर्ड बन सकते हैं?

- इस बार का लोकसभा चुनाव भले ही सुस्त नजर आया, लेकिन जनादेश ऐतिहासिक हो सकता है। अगर भाजपा ही सरकार बनाती है तो यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हैट्रिक होगी।
- पीएम मोदी पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद वे ऐसे दूसरे नेता होंगे, जो लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे। 1947 में पंडित नेहरू पहली बार प्रधानमंत्री जरूर बने, लेकिन चुनावी राजनीति शुरू होने के बाद उन्होंने 1951-52, 1957, 1962 का चुनाव जीता और लगातार प्रधानमंत्री रहे।
- शपथ लेने के बाद प्रधानमंत्री मोदी अटलजी की भी बराबरी कर लेंगे। अटलजी का कार्यकाल कम रहा, लेकिन उन्होंने तीन बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी।

राजसमंद में भाजपा प्रत्याशी महिमा के नाम राजस्थान की सबसे बड़ी जीत

राजसमंद लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी महिमा कुमारी मेवाड़ ने कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. दामोदर गुर्जर को 3 लाख 92 हजार 223 वोट से हराया है। महिमा कुमारी की राजस्थान में सबसे बड़ी जीत है। इस तरह शांतिपूर्ण मतगणना पूर्ण होने के बाद जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. भंवरलाल ने महिमा कुमारी को विजयी घोषित करने के बाद सांसद निर्वाचित होने का प्रमाण पत्र दिया।

चुनाव में भाजपा प्रत्याशी महिमा कुमारी को 7 लाख 81 हजार 203 वोट मिले, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. दामोदर गुर्जर को 3 लाख 88 हजार 980 वोट मिले। इस तरह जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. भंवरलाल ने महिमा कुमारी को विजेता व सांसद निर्वाचित घोषित कर दिया। इस दौरान उनके पति व नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़, कुंभलगढ़ विधायक सुरेन्द्रसिंह राठौड़, भीम विधायक हरिसिंह रावत, राजसमंद विधायक दीप्ति माहेश्वरी सहित मेड़ता, डेगाना, जेतारण व ब्यावर के विधायक व भाजपा नेता मौजूद थे। उसके बाद महिमा कुमारी ने जीत का विक्ट्री दिखाई और कार्यकर्ताओं ने जिंदाबाद के जयकारे लगाए।

7 विधानसभा में भाजपा रही आगे

राजसमंद लोकसभा चुनाव सीट की आठ विधानसभाओं में से भाजपा सात विधानसभा में आगे रही। जबकि मेड़ता विधानसभा में कांग्रेस प्रत्याशी आगे रहे। जीत का सबसे ज्यादा अंतर भीम विधानसभा में 76 हजार 108 वोटों का रहा। सबसे कम अंतर मेड़ता विधानसभा में 2 हजार 512 वोटों का रहा। ब्यावर विधानसभा में 75 हजार 691 मतों का अंतर रहा। राजसमंद में 63 हजार 479 मतों का अंतर रहा। कुंभलगढ़ में 58 हजार 115 मतों का अंतर रहा। वहीं महिमा कुमारी के पति विश्वराज सिंह के नाथद्वारा विधानसभा में 55 हजार 515 मत भाजपा को अधिक मिले। महिमा कुमारी की बड़ी जीत के बावजूद 2019 के लोकसभा के मुकाबले भाजपा को कम मत मिले। 2019 में पूर्व सांसद दीया कुमारी को 8 लाख 63 हजार 39 मत मिले थे। महिमा कुमारी को सात लाख 81 हजार 203 मत मिले 2019 के मुकाबले एक लाख 59 हजार 693 मत कम आए।

जितने मतों से भाजपा प्रत्याशी जीती, कांग्रेस को उतने भी वोट नहीं मिले

लगातार तीन लोकसभा चुनाव कांग्रेस की बुरी तरह से हार हो रही है। भाजपा जीतने मतों के अंतर से जीतती है, उतने भी वोट कांग्रेस प्रत्याशी को नहीं मिलते हैं। 2014 लोकसभा चुनाव में जहां भाजपा के पूर्व सांसद हरिओम सिंह राठौड़ को 6 लाख 44 हजार 794 मत मिले थे। जबकि कांग्रेस के पूर्व सांसद गोपाल सिंह इंडवा को दो लाख 49 हजार 89 मत मिले थे। जीत का अंतर तीन लाख 95 हजार 705 मतों का रहा था। जो कांग्रेस प्रत्याशी के कुल मत से ज्यादा रहा। 2019 में लोकसभा चुनाव में भाजपा की पूर्व सांसद दीया कुमारी को 8 लाख 63 हजार 39 मत मिले थे। जबकि कांग्रेस प्रत्याशी देवकीनंदन गुर्जर को 3 लाख 11 हजार 123 मत मिले थे। जीत का अंतर 5 लाख 51 हजार 916 रहा था। इस बार भी भाजपा की महिमा कुमारी को 7 लाख 81 हजार 203 मत मिले। जबकि कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. दामोदर गुर्जर को 3 लाख 88 हजार 980 मत मिले थे। जीत का अंतर 3 लाख 92 हजार 223 मतों का रहा। जो कांग्रेस प्रत्याशी के कुल मत से ज्यादा है।

चुनावी कार्यालय व मृत्यु की बैठक

चुनावी कार्यालय और मृत्यु होने के बाद बैठक में हमें कई समानताएं देखने को मिल जाती है। सबसे पहले तो एक बड़े से कमरे की व्यवस्था की जाती है, फिर उसमें गद्दे लगाए जाते हैं। फिर उस पर एक वाइट चद्दर बिछाई जाती है, जिससे वहां का माहौल शांतिप्रिय लगे, कुछ लोगों के लिए कुर्सियां भी लगाई जाती है, कुछ खास व्यक्ति वहां सदैव बैठे रहते हैं, ताकि मिलने वाले जब भी आए तो उन्हें कंपनी दे सके, उस व्यक्ति के बारे में अच्छी-अच्छी बातों का गुणगान कर सकें। मृत्यु वाले घर में जिस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, उसका फोटो लगाया जाता है, और चुनाव कार्यालय में भी बहुत कुछ ऐसा ही नजर आता है, कुछ पार्टी के नामचिन चेहरों के पोस्टर लगाए जाते हैं। मृत्यु वाले घर में मेहमानों की लिस्ट, चुनाव कार्यालय में मतदाताओं की लिस्ट, मृत्यु वाले घर में शोक पत्रिका (चीरी) और चुनावी कार्यालय में टेंप्लेट पडे हुए नजर आते हैं। समाचार पत्रों और सोशल मीडिया के मार्फत दोनों ही कंडीशन में उन व्यक्तियों के बारे में अवगत कराया जाता है।

थोड़ी थोड़ी देर में चाय के लिए भी आवाज दी जाती है, कुछ लोग मना करते हैं, लेकिन उनकी मनवार दोनों ही जगह बड़ी आत्मीयता से की जाती है, आने वाला व्यक्ति एक जगह सांत्वना देता है और दूसरी जगह भी सांत्वना ही देता है। दूसरी जगह सांत्वना कुछ अलग होती है कि तुम ही जीतोगे, तुम्हारी जीत निश्चित है, चिंता ना करो, हम तुम्हारे साथ हैं। करीब करीब दोनों ही जगह 10 दिन की बैठक रहती है, कई लोग आते हैं और बैठकर चले जाते हैं, बाहर निकलकर उनकी बातें भी बड़ी रोचक होती है...। दोनों ही जगह उस व्यक्ति के अगले पिछले हिसाब की बड़ी विचित्र बातें लोगों को करते हुए अक्सर देखा जाता है, ऐसे में दोनों ही परिदृश्य में खर्चा लाखों रुपए में होता है, इसमें कई जगह भोजन की व्यवस्था भी रहती है और कई प्रकार के व्यसनों का भी उचित प्रबंध होता है। 12 दिन बाद यह सब कुछ दोनों ही जगह खत्म हो जाता है और 13वें दिन जो मरा है, उसके बड़े बेटे को अच्छा मुहूर्त देखकर पगड़ी रस्म का आयोजन ढोल के साथ करके उसे पगड़ी पहना दी जाती है। अब वह उस घर का सर्वे सर्वा हो जाता है, अब उसे सभी निर्णय लेने का अधिकार मिल जाता है और चुनाव में भी अंत में यही होता है, एक व्यक्ति को चुन लिया जाता है और उसकी बड़ी गर्मजोशी से ताजपोशी कर दी जाती है और नगर के सभी कार्यों को करने के लिए उसे अधिकार दे दिए जाते है, उसे उस चुनाव और पार्टी का उत्तराधिकारी घोषित करके वो पद सौंप दिया जाता है और वह अब नगर के सभी अच्छे व बुरे निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हो जाता है। इस तरह से यह दोनों ही कार्य संपादित हो जाते हैं और जो लोग इन सभी कार्यों से जुड़े होते हैं, वह अपने अपने घर चले जाते हैं।

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली
मो. 9001011755

ये पब्लिक है, सब जानती है

प्रथम दृष्ट्या भारतीय लोकतंत्र में जनेच्छा और अपेक्षाओं की अभिव्यक्ति के असाधारण परिणामों के माध्यम वाले 2024 के लोकसभा के चुनावों में एनडीए सहित अन्य गठबंधन की स्थितियों को हम भारतवर्ष के सांस्कृतिक वर्चस्व के विज़न और लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ने की जिजीविषा की राह में न समझ आने वाली उपलब्धि के रूप में देख रहे हैं। यह सब अति महात्वाकांक्षी, अति विश्वासी और अतिरेक भरी घोषणाओं पर भविष्य के लिए दी गई चेतावनी के रूप में राजनीतिज्ञों को सबक सिखाने का भी संकेत है। जनता का और खबरदार भी करता है कि इन सबसे बचकर चलने में ही किसी भी पार्टी का अस्तित्व बचा रह सकता है। यह राष्ट्र निर्माण की दिशा में नेतृत्व करने वालों के कान उमेठने वाली जनता की जीत है। यह नए जनादेश के सभी नेताओं की क्षमताओं को अभी और तराशने के लिए सशक्त बनने की विनम्रता और जनता के सपनों को जमीन पर उतारने के प्रयासों को किए जाने की सीख भी देती है।

वैसे तो राजनीति अब आम और बुद्धिजीवियों की रूचि का विषय ही नहीं रहा। तथापि एक जागरूक वोटर की हैसियत से सोचने पर यह चुनाव हमें यह सोचने के लिए विवश करता है कि हमारी अपेक्षा की कसौटी पर यह चुनाव कितना खरा उतरा है? इस दृष्टि से इन पंक्तियों के लेखक के लिए यह चुनाव मानसिक धरातल पर अतिरेक पूर्ण वायदों और विश्वास भाजन बनने की अभेद्य दीवार बनाकर अंततः ठगे से जाने की अनुभूति देता है। वोटर के अपने इच्छित दल और प्रत्याशी को वोट दिए जाने के बाद सामान्यतः घोषित हुए हतप्रभ कर देने वाले परिणामों से हमारा मिथिक टूटा है। यह किसी भी जनतांत्रिक व्यवस्था में कयासों पर आधारित आभासी संभावनाओं के तौर से वोटर के विश्वास के शिथिल होने का विषय बना है।

निस्संदेह विगत अवधियों में मतों के ध्रुवीकरण के लिए 'सोशल इंजिनियरिंग' जैसे प्रयास हुए हैं। लोकतंत्रीय व्यवस्थाओं में यह सब कूटनीति का एक भाग है, लेकिन इस तरह के प्रयासों ने 2024 के लोकसभा चुनावों में वोटों का जो गणित प्रभावित किया है, उसके दूरगामी प्रभाव चिन्ता का विषय हो सकते हैं। धर्म, समाज, जाति, संविधान, निर्धनता के साथ जब राष्ट्रवाद और भावनात्मक ऐक्य को भी अपने अपने ढंग से परिभाषित कर उसे वोटर के सामने परोसा जाने लगा तो मतदान के परिणामों का परिदृश्य बदलने में कोई कसर ही नहीं रही।

एक बात ओर। विविध चुनावी भाषणों में जब इस सोशल इंजीनियरिंग ने अपना साम्राज्य फैलाना शुरू कर दिया, तो देश के ढांचागत और स्थायी प्रकृति के विकास के मुद्दों को तो दरकिनार ही कर दिया गया मानों। राम मंदिर जैसे भारतीय सांस्कृतिक वैभव को विश्व पटल पर रखने वाला विषय तो चुनाव की हैट्रिक का अहम् हिस्सा होना चाहिए था। यह चुनाव 'कौन हारा कौन जीता' के उहापोह की बहस बन जाए। इससे बड़ी विडंबना भला और क्या हो सकती है? संख्या का गणित किसी एक दल के पक्ष में है, सत्ता पर काबिज होने की कशमकश और एक दूसरे को न पचाने की मानसिकता एक और है और अति महात्वाकांक्षी सोच से उत्पन्न परिस्थितियों का पेंच इन सभी के बीच जो स्थितियां विकसित हुईं। वे एक नीर क्षीर विवेकी, संतुलन की तुला पर प्रत्याशी की क्षमताओं को परखने की योग्यता रखने वाले एक विनम्र वोटर के लिए अनुत्साह परक परिस्थिति है।

सब कुछ गुजर जाने के बाद अब यह दौर है, जब हतप्रभ, निराश, किंकर्तव्य विमूढ़ और ठगा सा मतदाता अपने आपसे पूछता हुआ प्रतीत हो रहा है, 'क्या यहीं तक मेरी भूमिका थी' ?

हां, मुझे इतना विश्वास जरूर है कि मैं किन्हीं ओर की व्यूह रचना में फंसा अभिमन्यु हूं, जो सब कुछ जानकर भी अंततः छला गया। मैं मौन हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि-

'ये पब्लिक है सब जानती है।"

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

क्या वाकई चुनाव चिह्न ही घोर अभिशाप है, इस पार्टी के लिए?

कांग्रेस को जो पाना था वह पिछले दशकों में आशा-अपेक्षाओं और क्षमताओं से अधिक पा चुकी है। अब इस पार्टी को कोई भविष्य नहीं दिखता। और इसका सबसे बड़ा कारण है इसका चुनाव चिह्न - पंजा। सामुद्रिक दृष्टि से गहनतापूर्वक देखा जाए तो यह पंजा हर दृष्टि से दुर्भाग्यशाली हाथ ही कहा जा सकता है। केवल पंजे के बूते कांग्रेस चुनावी वैतरणी पार नहीं कर सकती। इससे जुड़े नेताओं और साथी दलों के सम सामयिक ग्रह गोचर और पुरखों के बचे-खुचे पुण्यों का सारा फल अब तक कांग्रेस पूरी तरह भोग चुकी है, आगे अब संभावनाएं खत्म होती दिख रही हैं। अकेले अपने दम पर यह पार्टी कभी भी राजसुख को प्राप्त नहीं कर पाएगी।

इसके चुनाव चिह्न पंजे से भाग्य, यश और प्रगति की महत्त्वपूर्ण रेखाएं नदारद हैं और जिस ''हाथ'' का प्रचार किया जा रहा है, उसकी हस्तरेखाओं से दुर्भाग्य की ही झलक मिल रही है। ज्योतिषीय और सामुद्रिक रहस्य विधाओं से इस चुनाव चिह्न का विश्लेषण किया जाए तो इस प्रकार के राजसुख विहीन दुर्भाग्यशाली चुनाव चिह्न के सहारे कांग्रेस का अकेले ही चुनावी वैतरणी पार कर पाना कांग्रेस के भाग्य में ही नहीं है। इस चुनाव चिह्न हाथ से भाग्य रेखा और यश - प्रतिष्ठा रेखा (सूर्य रेखा) पूरी तरह गायब है, हृदय रेखा विखण्डित हो गई है, जीवन रेखा भी दुर्भाग्य को इंगित करने लगी है। इस चुनाव चिह्न में राजयोग होने का कोई चिह्न नज़र नहीं आता। न ही इसमें कोई भी एक चिह्न है जो सौभाग्य का सूचक हो। इस प्रकार की हस्तरेखा वाले चुनाव चिह्न के सहारे कांग्रेस के लिए सत्ता सुख पाने का स्वप्न कभी पूरा नहीं हो सकता और पार्टी के लिए आने वाला समय विडम्बनाओं से भरा हुआ रहेगा।

कांग्रेस के चुनाव चिह्न के आधार पर सटीक विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि इस''हाथ'' से जीवन रेखा अब सिमट गई है। यह अन्त में सर्प जिह्वाकार हो चली है जिससे जितने वर्षों का सत्ता सुख बदा था वह पूरा हो चुका है। अब यह आगे जारी नहीं रह सकेगा। इसके नेताओं के तत्कालीन ग्रह-गोचर और दूसरी पार्टियों के ग्रह-नक्षत्रों के सहारे इसे अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए निरन्तर प्रयास करने की आवश्यकता हमेशा रहेगी। लेकिन अब इसका पूरा कुनबा धीरे-धीरे सिमटता हुआ कुछ समय बाद अस्तित्व को खो देगा। इसके नेताओं द्वारा किए जाते रहे धर्मविरूद्ध कृत्यों और अभिव्यक्ति के पापों का भी कुफल पार्टी को गर्त में ले जाने के लिए सहयोगी की भूमिका में बना हुआ है। इसमें हृदय रेखा विखण्डित हो चली है और इससे स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि पार्टी की जो असली पहचान रही है उससे वह भटक चुकी है इससे इसके नेताओं का आत्मविश्वास भी डगमगाता रहने लगा है। इस चुनाव चिह्न में हृदय रेखा गुरु पर्वत के पार जाने की दिशा में है, जो पार्टी के अंदरूनी छल, ठगी, धोखाधड़ी और भीतरघात आदि की द्योतक है। कांग्रेस के इस हाथ में भाग्य रेखा का कहीं अता-पता नहीं है और ऐसे में भाग्य रेखा के बगैर राजयोग मिलना संदिग्ध है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार भाग्यरेखा हीन हस्त वाले भटकाव के रास्ते पर ही रहते हैं और दुर्भाग्य उनका साथ कभी नहीं छोड़ता।

इस हाथ में मस्तकरेखा चन्द्र पर्वत की ओर अधिक झुकी हुई है जो चिन्ता की प्रतीक होकर रात-दिन उलझनों में घसीटती रहती है और अन्ततः डूबो देती है। बुद्धि, यश, सम्पदा और प्रतिष्ठा की सूचक सूर्य रेखा का पूरी तरह अभाव है। मणि बंध रेखा कटी-फटी है। ऐसी मणिबन्ध रेखाओं वाला अल्पजीवी होता है। ऐसे में कांग्रेस की आयु अब समाप्त हो चली है। इस हाथ में जीवन रेखा से मस्तक रेखा का उद्गम पृथक से हुआ है। ऐसी रेखा वालों में कार्य के प्रति उदासीनता, ढीली-ढाली नीति, सुस्ती तथा हर क्षेत्रा में मंथर गति प्रमुख लक्षण हैं।

ऐसी हस्तरेखा के योग वालों के भाग्य का सूर्य अस्त ही हो जाता है। ज्योतिषीय आकलन के अनुसार यह चुनाव चिह्न अपनी दुर्भाग्य रेखाओं के कारण कांग्रेस को अब सत्ता सुख कभी नहीं दिला सकेगा। यह समस्त आकलन और निष्कर्ष ज्योतिषियों, हस्तरेखाविदों आदि से सम्पर्क कर एकत्रित किया गया है।

डॉ. दीपक आचार्य
लेखक, विचारक
पूर्व उप निदेशक
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग
बांसवाड़ा

जनता और जनप्रतिनिधि जनतंत्र की आत्मा हैं

भारत एक पंथ निरपेक्ष बहुआयामी लोक संस्कृति का देश है और 1000 साल की गुलामी के बाद आजादी की हवा में तिरंगे के तीन रंग में दुनिया को सबसे बड़े लोकतंत्र का हवाला देते हुए विकास के रास्ते पर चल 75वीं वर्षगांठ मनाता विकासशील देश से विकसित देश बनने की ओर बढ़ता राष्ट्र है, जो भारत माता का ऊंचा दर्जा पाकर वन्दे मातरम् और वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धान्त पर चल दुनियां के साथ कंधे से कंधा मिलाकर गुट निरपेक्ष छवि के साथ अपने आपको जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान का नारा देते हुए परमाणु शक्ति सम्पन राष्ट्र की श्रेणी में लाकर खड़ा करता और दुश्मन देशों को उनकी ही भाषा में जवाब देता राष्ट्र बन गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है, मगर इस देश की कई आंतरिक समस्या है।

देश की 65 प्रतिशत आबादी गांव और ढाणियों में निवास करती है, बाकि कस्बों, शहरों और महानगरों में रहकर गुजर बसर करती है। देश का विशाल भू भाग वो भी भौगोलिक दृष्टिकोण से अलग अलग प्रकृति को अपने अन्दर समेटे हुए हैं। इसीलिए अलग-अलग प्रकृति की अलग-अलग समस्याएं हैं, जिस पर देश में शासन करने वाली राजनीतिक पार्टियों को ध्यान देने की जरूरत है। आम आदमी के मूलभूत सुविधाएं और मूलभूत समस्या रोटी, कपड़ा, मकान, सड़क, शिक्षा, शुद्ध पानी, जहां स्कूल, अस्पताल, सड़क, पानी, विद्युत की व्यवस्था है, वहां की जनता खुशहाल जीवन जीती है, मगर देश की आजादी के बाद भी हर गांव, हर परिवार तक ये सुविधा सरकार की तरफ से अच्छी तरह से पहुंचनी चाहिए, मगर आज भी इसका कही-कही अभाव है।

इस देश की सबसे बड़ी ताकत मध्यम वर्ग है, मगर ये ही वर्ग आजादी के बाद से ही आज तक की राजनीति में सबसे ज्यादा उपेक्षा का शिकार हुआ है, जो सबसे ज्यादा टैक्स सरकार को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देता है, वो भारत का मध्यम वर्ग है। देश ही नहीं दुनिया के व्यापार का सबसे बड़ा बाज़ार आज भारत के मध्यम वर्ग की मेहरबानी से फल फूल रहा है, मगर सबसे ज्यादा मंहगाई की मार इसी वर्ग पर पड़ रही है। इसलिए इस और देश की नई सरकार को नीति बना मध्यम वर्ग के हितो का ध्यान रखने की जरूरत अब आन पड़ी है।

रोटी, कपड़ा और मकान, शिक्षा ये देश के मध्यम और गरीबी रेखा के आस पास या गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले हर व्यक्ति की जरूरत है, मगर ये सब महंगें है। एक साधारणा आम आदमी, जिसकी आय इतनी कम है कि महीना खत्म होने से पहले ही वो खाली जेब हो जाता है वो आज के युग में शहर क्या छोटे कस्बे में प्लॉट नही खरीद सकता इतने आसमान छूते जमीनों के भाव है, मकान बनाना तो दूर की बात है, कोई छोटा, मोटा व्यापार करने वाला या सरकारी गैर सरकारी नौकरी करने वाला लोन लेकर मकान बना भी लेता है, तो 25-30 वर्ष तो किश्त भरने में ही निकल जाते हैं।

राशन का सामान, स्कूल की फीस, पेट्रोल का खर्च, दूध का बिल और पानी व लाइट का बिल आम आदमी बस इसी गणित में जोड़ तोड़कर अपना गुजारा कर रहा है। गरीब और ग्रामीण जनता को तो सरकार से कई तरह की योजना में छूट मिलती है, उसका आर्थिक बोझ भी मध्यम श्रेणी के लोगों पर ही प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। देश की राजनीति धर्म और जाति के वोट बैंक की गणित में ही उलझ कर रह गई है। इसका सबसे बड़ा खामियाजा इस देश को उठाना पड़ रहा है। राजनैतिक पार्टिया इस नाम से जनता को भ्रमित कर लड़वा कर और बैजा वैचारिक मतभेद पैदा कर अपना उल्लू सीधा कर सत्ता में आने पाने का प्रयास करती है। आजादी के बाद से ही वर्ग भेद की राजनीति का ये चरित्र देखने को मिल रहा है, जिसे खत्म करना चाहिए।

जाति और धर्म के नाम पर वोट मांगने पर चुनाव आयोग को प्रतिबंध सभी राजनैतिक पार्टियों पर शक्ति से लगाना चाहिए। नई सरकार को एक देश एक कानून का बिल - जनसंख्या नियंत्रण बिल संसद में पास करना चाहिए। आरक्षण का लाभ जाति के साथ साथ आर्थिक रूप से

कमजोर सभी संप्रदाय और वर्ग को देना चाहिए। किसी भी जाति या वर्ग समुदाय का व्यक्ति हो जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करता हो, उसे आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए। क्योंकि गरीबी, ऊँच नीच, जाति या अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक सम्प्रदाय पूछकर नहीं आती, गरीब परिवार किसी भी जाति में हो सकता है।

अपनी राजनैतिक पार्टी की सरकार बनाने की सोच के साथ सरकार बनाना और देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए सरकार बनाना इन दोनों विचारधारा में बहुत अन्तर है। आजकल सभी राजनैतिक दल बस अपनी सरकार बनाने की सोच के आगे सोचते ही नहीं। इसीलिए जब भी अल्पमत की सरकारें बनी है, जिसमें किसी भी बड़ी पार्टी को बहुमत नहीं मिला वो सरकारे देश को आगे बढ़ाने में कामयाब होने से ज्यादा घोटालो और आपसी राजनैतिक खींचतान की भेंट चढ़ पड़ती-गिरती नज़र आती है, जो देश को अस्थिर और कमजोर करती है, जिससे देश की विदेश नीति सबसे ज्यादा प्रभावित होती है।

दुनिया का हर बड़ा देश दूसरे देश को अस्थिर करने में लगा है, जिससे दुनिया में उसकी ताकत उसका प्रभाव, उसकी तानाशाही कायम रहे। भारत आज दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक ताकत बनने की और बहुत ही तेज कदमों से आगे बढ़ रहा है, ये दुनिया के कई विकसित और विकासशील देशों के लिए चिंता का विषय है। इसलिए दूसरे देश भी भारत में मजबूत सरकार नहीं बन पाए, उसके लिए साम, दाम, दंड, भेद की सभी नितियां व षड़यंत्रकारी कूटनीति का परोक्ष रूप से इस्तेमाल करते हैं। इसलिए देश के संविधान में बदलाव कर द्विदलीय शासन प्रणाली लागू करनी चाहिए, जो दुनिया के कई देशों में सफल है। इससे भारत में 5 वर्ष के लिए हर बार स्थिर सरकार बनेगी, जो राजनीतिक पार्टी जनता के हितों का ख़याल रखेगी, वह पार्टी बहुमत लाने में कामयाब होगी और जो नहीं सफल होगी, वो विपक्ष में बैठगी। इससे सभी क्षेत्रीय दल अपनी विचारधारा से मेल खाते हुए राष्ट्रीय दल में समाहित हो जाएंगे। इससे संपूर्ण राष्ट्र का विकास एक सोच और एक रणनीति के अंतर्गत बिना किसी भेदभाव और दबाव से होने की संभावनाए बढ़ जाएगी, जिससे गांव और ढाणी में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पानी की समस्या एक तरह से पूरी तरह खत्म हो जाएगी और जो विरोध के स्वर जो देश के कौने कौन से अलग अलग आंदोलन के रूप में उठते है, वो भी समाप्त हो जाएंगें।

देश में स्थानीय और राष्ट्रीय समस्या दोनों ही जनमत को प्रभावित करती है। कई बार क्षेत्र की छोटी-छोटी समस्याओं की वजह से भी जनप्रतिनिधि हार जाते हैं, क्योंकि वो उन समस्याओं को नजरअंदाज करते हैं, मगर जिस राजनीतिक पार्टी के जनप्रतिनिधि ज्यादा हारते हैं, वो पार्टी बहुमत में देश हित में कार्य करने के बावजूद भी नहीं आ पाती, इसका उदाहरण वर्तमान में हुए लोकसभा चुनाव में देखने को मिला है। इसलिए जनप्रतिनिधियों को स्थानीय समस्याओं का समाधान करने के लिए हमेशा जनता के संपर्क में रहने की आवश्यकता है। क्योंकि कई जनप्रतिनिधि जीत जाने के बाद जनता का हालचाल पूछने के लिए नहीं आते हैं, वो अपने आपको जनसेवक से ज्यादा दाता मान लेते हैं और क्षेत्र की जनता को हाथ जोड़कर मांग करने वाला याचक जिस जनप्रतिनिधि में यह छंदम अहंकार आ जाता है, उसे जनता हरा देती है क्योंकि वो जन भावनाओं का सम्मान नहीं करते हैं। जनप्रतिनिधियों को अपनी इस बुराई पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

जनता के पास वोट देने की इतनी बड़ी ताकत हमारे संविधान में दे रखी है, जिसकी बदौलत वो सत्ता का उलट फैर करने की क्षमता रखती है। इसलिए जनता कि इस ताकत का जनप्रतिनिधियों को हमेशा ध्यान रखना चाहिए। भारत में बढ़ती हुई बेरोजगारी को कम करने के लिए छोटे व्यापार कुटीर उद्योग धंधे विकसित करते हुए चीन की तरह घर-घर में छोटे बड़े काम सरकार की तरफ से लोगों को देने चाहिये बढ़ती हुई मॉल संस्कृति के बाजार और ऑनलाइन बाजार पर सरकार को अंकुश लगाते हुए स्थानीय व्यापार को बढ़ावा देने के प्रयास करने चाहिए, जिससे छोटे व्यापार और काम धंधे छोटे बड़े शहर कस्बों में फिर से चल सके और रोजगार की संभावना बढ़ सके इस और इस सरकार को ध्यान देने की आवश्यता है। कई बार छोटे-छोटे स्थानीय मुद्दे चुनावों को इस तरह से प्रभावित करते है जिस तरह से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे प्रभावित नही करते इस लिये आम जनता के छोटे मुद्दे और स्थानिय मुद्दे को उनके क्षेत्र में आर्थिक सामाजिक समस्याओं का समाधान करते रहना चाहिये,जो नेता जनप्रतिनिधि जनता का दिल जीत लेता है वो जनप्रिय नेता एवं जन प्रिय जन प्रतिनिधि बन जाता है इस लिये त्याग समर्पण और सेवा के भाव से एक जन सेवक की तरह जनता का दुःख दर्द पीड़ा तकलीफ़ समझते हुए उनके बींच रहते हुए लोग सभा विधान सभा में उनके हित के मुद्दे उठाना चाहिये जो समस्या का निराकरण करने में इसमें कामयाब हो जाता है वो सच्चा और अच्छा जन सेवक कहलाता है और इस दुनिया को छोड़ जाने के बाद भी बरसो बरस जनता के दिलो में याद बन कर आबाद रहता है।

जनता और जन प्रतिनिधि दोनों ही वो सेतु है, जो जनतंत्र की नैया को मिलकर पार लगाते हैं। इस लिहाज से जनता और जन प्रतिनिधि जनतंत्र की आत्मा है क्योंकि जनता जनप्रतिनिधि के माध्यम से ही देश में लोक शाही चलाती है। आज भारत दुनिया की सबसे बड़ी लोकशाही है और सबसे बड़ी बात विभिन्न जाति धर्म संप्रदाय समाज होने के बावजूद देश सफलतम जनतंत्र की व्यवस्था देने में कामयाब रहा है ।

बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद मायोवाद, आतंकवाद, जातिवाद जैसी अनेक समस्याओं से जूझकर भी हम इस देश को विकसित भारत बनाने में कामयाब रहे हैं। इसमें देश की राजनीति का भी बहुत ही बड़ा योगदान है।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
वरिष्ठ साहित्यकार व कवि
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली
मो. 94146-21730

जुमलों पर न्याय का हथौड़ा!

वे डरे हुए हैं, बदहवास है। बावजूद इसके कि आंकड़े उनके पक्ष में है, इस बार जमीनी हकीकत कुछ और बयां कर रही है। इस हकीकत को वे भी पहचान रहे हैं। इसलिए वे और भी डरे हुए हैं, बदहवास हैं। मोदी के जुमलों पर न्याय का हथौड़ा भारी पड़ रहा है। बस्तर लोकसभा में विधानसभा की 8 सीटें हैं। हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में तीन सीटें -- बस्तर, बीजापुर और कोंटा -- कांग्रेस ने जीती हैं, तो चार सीटों -- कोंडागांव, नारायणपुर, जगदलपुर और चित्रकोट -- पर भाजपा ने जीत दर्ज की थी। इन 8 सीटों पर कांग्रेस को सम्मिलित रूप से 4,01,538 वोट तथा भाजपा को 4,81,151 वोट मिले थे। इस प्रकार भाजपा 79,613 वोट और 7.91% वोटों के अंतर से आगे थी।

वर्ष 2019 के पिछले लोकसभा चुनाव के परिणाम से विधानसभा चुनाव के ये परिणाम भाजपा के लिए आश्वस्तिदायक हैं। तब भाजपा को लोकसभा चुनाव में 3,63,545 वोट ही मिले थे और कांग्रेस को 4,02,527 वोट। इस प्रकार कांग्रेस के दीपक बैज ने भाजपा के बैदूराम कश्यप को 38,982 वोट और 4.27% के अंतर से हराया था। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने पिछली बार जिन दो सीटों पर विजय पाई थी, उनमें से एक बस्तर थी। इस प्रकार बस्तर लोकसभा में पांच साल पहले कांग्रेस से 4.27% वोटों से पीछे रहने वाली भाजपा आज 7.91% वोट से आगे हैं। निश्चित ही ये आंकड़ें प्रभावशाली हैं और भाजपा के पक्ष में हैं। इसके बावजूद भाजपा के चेहरे पर चिंता की लकीरें हैं और वह पूरी तरह आश्वस्त नहीं हैं। क्यों? इसका एक कारण तो मतदाताओं का वह असामान्य व्यवहार ही है, जिसने दिसंबर 2018 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को भारी भरकम जीत दिलाने के चार माह बाद ही अप्रैल 2019 में हुए लोकसभा के चुनावों में उसे पटकनी देने में कोई संकोच नहीं किया था। इस बार भी मतदाता कहीं ऐसा ही 'खेला' नहीं कर दें! दूसरा कारण, लगातार दस सालों से केंद्र में सत्ता में बने रहने और 2013-18 के दौरान केंद्र और राज्य दोनों ही स्तर पर सत्ता में बने रहने से पैदा सत्ता-प्रतिकूलता का कारक है, जिसने पिछली बार राज्य की सत्ता से उसे 10% वोटों के अंतर से बाहर कर दिया था। तीसरा कारण, स्वयं भाजपा की वे नीतियां हैं, जिससे राज्य की जनता और खासकर बस्तर की आदिवासी और गरीब जनता भुगत रही है।

इसी बदहवासी ने भाजपा को मोदी की कथित गारंटी के बावजूद अपना उम्मीदवार बदलने को मजबूर किया है। इस बार उसने एक भूतपूर्व सरपंच महेश कश्यप को टिकट दिया है, जिसकी राजनैतिक पृष्ठभूमि यही है कि वह संघ के आनुषंगिक संगठनों बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद से जुड़ा रहा है और धर्मांतरण विरोधी आंदोलनों की अगुआई करते हुए ईसाई आदिवासियों पर हमले करता रहा है। इस चेहरे

को सामने रखकर संघ-भाजपा ने हिन्दुत्व का कार्ड खेलने की कोशिश की है। कांग्रेस ने भी अपना प्रत्याशी बदला है और उसने लगातार 6 बार विधायक निर्वाचित हुए और भूपेश मंत्रिमंडल के आबकारी मंत्री कवासी लखमा को मैदान में उतारा है। कांग्रेस प्रत्याशी का व्यक्तित्व निश्चित ही भाजपा पर भारी पड़ रहा है।

बस्तर में मोदी की 8 अप्रैल को सभा हो चुकी है। राम मंदिर, धर्मांतरण और असफल हो चुकी केंद्रीय योजनाओं की जुगाली करने के सिवा उनके पास कोई मुद्दा नहीं था। मोदी गारंटी का जुमला भी था, लेकिन बेरोजगारों के लिए रोजगार, किसानों के लिए एमएसपी और कर्जमुक्ति, आदिवासियों के लिए राज्य प्रायोजित उत्पीड़न से मुक्ति और वनाधिकार, पेसा और मनरेगा कानूनों के क्रियान्वयन की गारंटी सिरे से गायब थी। पिछली कांग्रेस सरकार के भ्रष्टाचार पर तो वे गरज-तरज रहे थे, लेकिन अपने किए दुनिया के सबसे बड़े चुनावी बांड घोटाले पर चुप थे। उनके भाषण इस बात के संकेत थे कि एक व्यक्ति और एक दल के शासन को लादने की पूरी गारंटी है। वहीं 13 अप्रैल को हुई अपनी सभा में राहुल गांधी का पूरा भाषण मुद्दों पर केंद्रित था। आदिवासियों, बेरोजगार नौजवानों, गरीबी की समस्या उनके भाषण के केंद्र में थी और भाजपा की सांप्रदायिक नीतियों पर उन्होंने अपना निशाना साधा। रायपुर के वरिष्ठ पत्रकार राजकुमार सोनी कहते हैं कि बस्तर के आदिवासियों को धारा 370 के हटने या राम मंदिर के निर्माण से कोई मतलब नहीं है। इन मुद्दों को सामने रखकर भाजपा को अपनी जीत का सपना नहीं देखना चाहिए। लेकिन पत्रकार पूर्णचंद्र रथ का कहना है कि बस्तर लोकसभा क्षेत्र के शहरी हिस्से (जो अपेक्षाकृत बहुत छोटा है) में भाजपा का प्रभाव कांग्रेस से ज्यादा है।

जगदलपुर के एक नौजवान कांग्रेसी कार्यकर्ता भुजित दोशी कहते है कि मोदी की सभा के मुकाबले राहुल की सभा का बड़ी होना बताता है कि बस्तर में हवा किस ओर बह रही है। महिलाओं के उत्थान के लिए हर वर्ष उन्हें 1 लाख रुपए देने के वादे के साथ ही आज राहुल गांधी ने

किसानों की कर्जमुक्ति, उन्हें एमएसपी की कानूनी गारंटी देने और नौजवानों से खाली पदों को भरने का जो वादा किया है, वह मोदी की किसी भी गारंटी पर भारी पड़ेगी। दरभा के आदिवासी नौजवान संतोष यादव ने कहा कि राज्य में भाजपा सरकार आने के बाद नक्सलियों के दमन के नाम पर आदिवासियों का उत्पीड़न बढ़ गया है और भाजपा सरकार फिर से नए रूप में सलवा जुडूम को लाना चाहती है। लोहंडीगुड़ा के आदिवासी टाटा के लिए बंदूक की नोंक पर उनकी जमीन छीनने की रमन सरकार की करगुजारी को अभी तक नहीं भूले हैं। नगरनार के स्टील प्लांट को मोदी सरकार आज भी निजीकरण की सूची में रखे हुए हैं। इसलिए बस्तर का नौजवान मोदी की किसी भी गारंटी पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं है। हंसते हुए वे कहते हैं -- 'हाथी के दांत दिखाने के और होते हैं, खाने के और। मोदी गारंटी का यही हाल है।' उल्लेखनीय है कि रमन राज में संतोष नक्सलियों के साथ संबंध रखने के झूठे आरोप में कई माह जेल काट चुके हैं।

लेकिन फिर वही सवाल जीतेगा कौन? क्या कांग्रेस 80,000 वोटों की खाई को पाटने में सफल हो पाएगी? पत्रकार रितेश पांडे एक मशहूर मजाक की याद दिलाते हैं : जनता तो चाहती है कि कांग्रेस जीते, लेकिन यदि कांग्रेसी ही भाजपा को जीताना चाहे तो...? वे कहते हैं कि विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की हार का यह एक बड़ा कारण था। लेकिन अब कांग्रेसी इस हार से सबक लेकर एकजुट होंगे और मोदी के जुमलों पर न्याय का हथौड़ा भारी पड़ेगा।

संजय पराते
छत्तीसगढ़, 94242-31650
sanjay.parate66@gmail.com

कथा में दो घंटे बाद

आने वाले टी ब्रेक का बेसब्री से
रहता है इंतजार
कथा पांडाल में बैठी औरतों को।
वे सिमट आती हैं करीब परिचित औरतों के
और गरमा गरम चाय के साथ लेती है आनंद
यहां वहां और दुनिया भर की
रस रसीली बातों का
परिवार में सास बहू वह बच्चों की बातों का
वे चाय ब्रेक तक कर लेना चाहती हैं
जी भर बातें।
मिश्री सी मीठी बातों को
नहीं छोड़ना चाहती कल तक के लिए।
आनंद भरी बातों की इस दुनिया में
वे भूल जाती हैं अपनी हारी बीमारी
कमर दर्द और पैरों की फूटन को
परिवार में उपजे टेंशन को
सचमुच हंसते मुस्कुराते टी ब्रेक में लेती हैं
बातों का पूरा आनंद
कथा में बैठी औरतें।

दिनेश विजयवर्गीय
215 मार्ग 4 रजत कॉलोनी, बूंदी
मो. 9413128514

ख्वाबों में देखा है

सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है
राधे कृष्णा की किताबों में देखा है।
तेरी पलकों का झपना, फिर खुलना
निमिष नयन, फिर उसका मिलना।
तेरा हर नूर इबादत में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

तुमुल तरंगों की तुम तरणी
मधु मकरंद धवल की धरणी ।
तेरे ताप प्रखर, अजाबों में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

अनियारे नयन के तारे द्वय
विशिख चपल नर्तन निर्भय।
तेरी नीरवता, महताबों में देखा है
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

व्योम-व्योम है गान तुम्हारा
विद्यमान अनमृत दान तुम्हारा ।
तेरा वरद, सितारों में देखा है।
सोना, तुमको ख्वाबों में देखा है।।

डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद
राजवंशी नगर
पटना (बिहार)

बिखरे ना परिवार हमारा

भैया न्याय की बातें कर लो,
सार्थक पहल इक रख लो।
एक मां की हम दो औलादें,
निज अनुज पे रहम कर दो।।

हो रहा परिवार की किरकिरी,
गली, नुक्कड़ और बाजारों में।
न्यायपूर्ण आपसी संवाद छोड़,
अर्जी दिए कोर्ट कचहरी थानों में।।

लिप्सा रहित हो सभा हमारी,
निष्पक्ष पूर्ण हो संवाद हमारा।
मैं कहूं तुम सुनो तुम कहो मैं,
ताकि खत्म हो विवाद हमारा ।।

कर किनारा धन दौलत को,
भाई बन कुछ पल बात करों।
मां जैसे देती रोटी दो भागों में,
मिलकर उस पल को याद करों।।
बिन मां बाप का अनुज तुम्हारा,
मां बाप बनके आज न्याय करों।।

हर लबों पे अपनी कानाफूसी,
बैरी कर रहे अपनी जासूसी।

भैया, गर्भ एक लहू एक हमारा,
कंधों पे झूलने वाला मैं दुलारा।
आओ मिलकर रोके दूरियां,
ताकि बिखरे ना परिवार हमारा।।
ताकि बिखरे ना......... ।।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, जौनपुर,
उत्तरप्रदेश -222129.
मोबाइल - 8367782654.
व्हाट्सअप - 8792257267.
ईमेल - ankur3ab@gmail.com

गुमनाम फरिश्ता मंगल पांडे

कभी तुमसे कोई कहे की चलोगे शमशान, तो तुम घबरा जाओगे और कहोगे पागल हो गए हो क्या, आखिर कौन जाना चाहता है, जीते जी श्मशान, श्मशान में कभी जश्न नहीं मनता] वहां तो गमगीन माहौल में चिताएं जलती हुई देखी जाती है। उन जलती चिताओं के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगों के बीच एक नौजवान आता है, जिसका ना तो मरने वालों से, ना वहां उपस्थित बैठे हुए लोगों से कोई वास्ता होता है।

हां हम आज उसी गुमनाम शख्सियत ही बात करने जा रहे हैं, जो उस श्मशान में प्रकट होता है। उस शख्सियत का नाम है **भानु पालीवाल**। वैसे उनके एक अलग ही अंदाज को कई लोगों ने देखा है, प्यार से कई लोग उनको **मंगल पांडे** भी कहते हैं, लेकिन आज हम उनके उस कार्य को सबके सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं, जो वाकई में उनको आम से खास बनाता है, जो काबिले तारीफ है।

किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसके घर से अन्तिम विदाई होती है, रास्ते में राम नाम सत्य कहते हुए लोगों के शमशान की ओर बढ़ते कदम आखिर में विश्राम घाट पर रुक जाते हैं, जहां पर बहुत ही गमगीन माहौल में उसको चिता पर लिटाया जाता है। तपती धूप में साथ आए हुए लोग छाया देखकर इधर-उधर बैठ जाते हैं, थोड़ी ही देर में उनके कंठ सूखने लगते हैं, प्यास लगने लगती है, तब उनकी आंखें तलाश करती है पानी की, चारों ओर नजर घुमाने पर भी उनको वहां पानी की कोई भी सुविधा नजर नहीं आती, तब उनका शरीर बेचैन होने लगता है, तभी एक नौजवान भानु पालीवाल ठंडे पानी के कैंपर लेकर श्मशान में प्रवेश करता है, वह हर व्यक्ति के पास में जाता है और बड़े ही आदर से सबको शीतल जल पिलाकर उनके सुखे कंठो को तृप्त करता है, ऐसा नहीं है कि यह गुमनाम शख्स एक जगह ही पानी रखकर इतिश्री कर लेता है, बल्कि पूरे श्मशान में जो जहां बैठा है, वहां जाकर उनको बड़ी ही आत्मीयता से पानी पिलाता है, जब सब लोग पानी पी लेते हैं तो वह निकल जाता है, बिना कुछ कहे अगले पड़ाव की ओर।

इस शख्स की कोई संस्था नहीं है, ना ही इस सेवा कार्य के लिए यह नियुक्त है, ना ही वह इस कार्य के लिए पैसा लेते हैं, बल्कि इनको जैसे ही समाचार मिलते है, यह शख्स लग जाता है अपने सेवा कार्य को अंजाम देने के लिए। अक्सर हम देखते हैं कई नेताओं को, बड़े-बड़े सेवा करने वालों को जो कार्य तो करते हैं लेकिन प्रदर्शन के लिए, लेकिन यहां पर यह शख्स चुपचाप आता है और सेवा करके निकल पड़ता है। ऐसे निस्वार्थ सेवाभावी भानु पालीवाल (मंगल पांडे) को हम सलाम करते हैं, और ठाकुर जी से यही दुआ करते हैं कि आप जो बिना लोभ, लालच, मोह,माया के मानव की निस्वार्थ भावना से जो सेवा कर रहे हैं, आपको उसका फल जरूर मिले, जय श्री कृष्णा

राहुल दीक्षित RD
युवा साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली
मो. 9461016726

योग रखे निरोग

संसार में सब प्रकार का वैभव, सुख-सुविधा, ऐश्वर्य सब कुछ है लेकिन यदि अपना मन सुखी नहीं है तो आप सुखी नहीं हो सकते! पर क्या आपने सोचा है कि मन का सबसे बड़ा दुख क्या है, यही कि हम अपने भीतर एक अपूर्णता, अधूरापन अनुभव करते हैं और उस अधूरेपन को भरने के लिए बाहर के व्यक्ति, वस्तु, संबंध, सत्ता, संपत्ति, ऐश्वर्य को खोजते हैं जिसके प्रति एक अविवेकपूर्ण तृष्णा जागृत हो जाती है और इसमें व्यक्ति पागल हो करके न जाने कितने अनर्थ करता है। इसलिए योग में कहते है मैं स्वयं में पुर्ण हूं, सृष्टि भी अपनी पूर्णता, दिव्यता में प्रतिष्ठित है, यही है योग का सिद्धांत।

योग को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। इसे प्राणायान, योगा, योग भी कहते हैं। योग एक संस्कृत शब्द है जो युज से आया है, जिसका अर्थ है इकट्ठा होना, बांधना। सामान्य भाव में योग का अर्थ है जुड़ना। यानी दो तत्वों का मिलन योग कहलाता है। योग की पूर्णता इसी में है कि जीव भाव में पड़ा मनुष्य परमात्मा से जुड़कर अपने निजी आत्म स्वरूप में स्थापित हो जाए। योग में आसन, प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से हम मन, श्वास और शरीर के विभिन्न अंगों में सामंजस्य बनाना सीखते है। जिससे तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में सहायता मिलती है। इससे शरीर मे लचीलापन, रोगप्रतिरोधक क्षमता, मन और आत्मा में नियंत्रण व आत्मविश्वास विकसित होता है।

योग का सबसे पहले उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है, जो पांचवीं या छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास शुरू हुआ था । भारतीय प्राचीन ग्रंथों – भागवत गीता, उपनिषद, योग वशिष्ठ, हठ योग प्रदीपिका, गेरांडा संहिता, शिव संहिता, पुराण आदि में भी इसका जिक्र किया है। योग का जनक 'पतंजलि' को माना जाता है, क्योंकि उन्होने योग सूत्रों के माध्यम से इसे और अधिक सुलभ बनाया। इसके अलावा उन्होंने योग के जरिए लोगों को ठीक प्रकार से जीवन जीने की प्रेरणा दी थी।

आजकल के व्यवहारिक क्रियाकलापों में योग सिर्फ आसनों तक ही सीमित रह गया है। लेकिन वास्तव में यह योग सिर्फ़ आसनो तक सीमित नहीं है बल्कि इससे कई अधिक है। इससे केवल शारिरिक नहीं अपितु मानसिक और आध्यात्मिक शांति भी प्राप्त होती है। करीब 5,000 साल पहले तक योग का विकास सभी चरणों पर किया गया – जिसमे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप शामिल थे। इसीलिए योग के प्रमुखतः चार प्रकार माने गए है-

राज योग : राज का अर्थ शाही होता है और योग की इस शाखा का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अंग है 'ध्यान'। इस योग के आठ अंग है, जिससे पतंजलि ने इसका नाम अष्टांग योग रखा। यह 8 योग इस प्रकार है, यम (शपथ लेना), नियम (आत्मानुशासन), आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण (एकाग्रता), ध्यान (मेडिटेशन), समाधि (अंतिम मुक्ति)।

कर्म योग : अगली शाखा कर्म योग या सेवा का मार्ग है और हम में से कोई भी इस मार्ग से नहीं बच सकता है। इस बारे में जागरूक होने से हम भविष्य को अच्छा वर्तमान बनाने का एक रास्ता बना सकते है, जो हमें नकारात्मकता और स्वार्थ से बाध्य होने से मुक्त करना है।

भक्ति योग : भक्ति योग भक्ति के मार्ग का वर्णन करता है। सभी के लिए सृष्टि में परमात्मा को देखकर, भक्ति योग भावनाओं को नियंत्रित करने का एक सकारात्मक तरीक़ा है।

ज्ञान योग : अगर हम भक्ति को मन का योग मानते है, तो ज्ञान योग बुद्धि का योग है, ऋषि या विद्वान का मार्ग है। इस पथ पर चलने के लिए योग के ग्रंथो के अध्ययन के माध्यम से बुद्धि के विकास की आवश्यकता होती है।

आधुनिक युग में लोग अपनी भाग-दौड़ भरी जिंदगी में योग के महत्व को भूलते जा रहे। कुछ एक लोग जो स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता रखते है वे भी जिम जाना पसंद करते है। लेकिन योग करने के अपने ही कई फायदे हैं। जहां सिर्फ जिम करने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, वहीं योग हमारे शरीर के साथ-साथ दिमाग को भी स्वस्थ बनाता है। योग करने से इससे भी अधिक फायदे होते है जैसे- तनाव से मुक्त जीवन, मानसिक शक्ति का विकास, प्रकृति के विपरीत जीवन शैली में सुधार आना, निरोग काया, रचनात्मकता का विकास, मानसिक शांति प्राप्त होना, सहनशीलता में वृद्धि, नशा मुक्त जीवन, वृहद सोच, उत्तम शारीरिक क्षमता का विकास आदि।

योग के इन्ही लाभों को ही जन-जन तक पहुँचाने के लिए व लोगों को जागरुक करने के लिए बाबा रामदेव के किए गए प्रयासों द्वारा भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2015 में 21 जून की तिथि को योग दिवस के रूप में मनाया जाना घोषित कर दिया। 21 जून का दिन ही इसलिए चुना गया क्योंकि यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है। 2015

के बाद से सिर्फ भारत मे ही नही बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसका विशेष महत्व है। इससे होने वाले फायदों को सभी ने स्वीकारा है। श्री नरेंद्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में कहा था, "योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है; मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है; विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है, लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवन- शैली में यह चेतना बनकर, हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है। तो आयें एक अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस को गोद लेने की दिशा में काम करते हैं।"

इस वर्ष भी योग महोत्सव-2023 का आयोजन योग के विभिन्न आयामों एवं उसकी उपयोगिता के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए किया गया है। योग महोत्सव का उद्देश्य संपूर्ण विश्व में स्वास्थ्य तथा कल्याण एवं शांति को बढ़ावा देने के लिए एक जन आंदोलन को प्रोत्साहित करना है और इसके लिए आयुष मंत्रालय द्वारा संपूर्ण देश में 100 दिनों, 100 शहरों तथा 100 संगठनों के क्रियाकलापों का प्रारंभ किया गया। इसमें प्रख्यात योग गुरुओं, आयुष के विशेषज्ञों, प्रतिनिधियों एवं योग के प्रति उत्साही व्यक्तियों सहित प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की शुभ उपस्थिति तथा प्रवचनों के साक्षी बन रहे हैं। तो आइए हम सब भी इसके साक्षी बने और जीवन मे योग को अपनाए।

सोनल मंजू श्री ओमर
श्रीजी अपार्टमेंट, शांति नगर,
रैयाधार के पास, रामापीर
चौकड़ी, राजकोट,
गुजरात - 360007
मो. 8780039826

कविता

बाण बहेलिये के क्रौंचपक्षी पे छूटे, बनी कविता।
वाल्मीकिजी के हृदय में स्वर फूटे, बनी कविता।।

भावों, मनोवेगों और वेदना की मार है कविता।
दर्द स्याही में डूबी, कलम की धार है कविता।।

कवि को अमर बनाने वाली पतवार है कविता।
तेज तपती धूप में पानी की बौछार है कविता।।

शब्द संयोजन, आंसू तो कभी अंगार है कविता।
शारदे काआशीर्वाद, ज्ञान का भंडार है कविता।।

हास्य वीर व्यंग्य,भाषा शब्दों का दम है कविता।
दुख दर्द आह कराह, जमाने का ग़म है कविता।।

व्योम में रवि,चंद्र, ग्रह, नक्षत्र ध्रुव तारा है कविता।
धरती गगन पर्वत झरनों का नजारा है कविता।।

कवि हृदय के मनोभावों को, जताना है कविता।
सच को सच व झूठ को झूठ बताना है कविता।।

राम गोपाल आचार्य
वरिष्ठ साहित्यकार
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

Be an- "Eco-Conscious School"

"Have you ever wondered why this summer feels warmer than the last?
Have you noticed how the sun's intensity seems to be increasing each year?
What impact is this rising temperature having on our communities, wildlife, and daily lives?

Are you the one thinking to address it or just to increase a number AC at office & home?

In the midst of this sweltering season, let's pause and reflect on the broader environmental implications and the role we play in protecting our planet."

In recent years, the escalating issue of increasing temperatures has become a cause for concern. I believe schools, as centers of learning and community engagement, has a pivotal role to play in shaping environmentally conscious citizens. By integrating environmental protection and climate action into their curricula and community initiatives, schools can actively contribute to bring a change to promote a sustainable future.

Schools can shift from fancy to significant activities and incorporate environmental science, climate change, and sustainability topics into their curricula. This approach opens the opportunity that students understand the science behind global warming and the importance of responsible environmental practices.

Green School Initiatives: Schools can establish green teams or environmental clubs to promote sustain ability within the school community. These teams can oversee recycling programs, waste reduction initiatives, and the use of eco-friendly materials in school facilities.

Community Connection: Schools can collaborate with local communities to promote environmental awareness. Hosting workshops, seminars, and public events can educate and inspire community members to take action.

Energy Conservation Measures: Implementing energy-efficient practices such as using LED lighting, upgrading to energy-efficient appliances, and improving insulation can reduce the school's carbon footprint.

Creating Green Spaces: Schools can create green spaces on their campus, including gardens, trees, and vegetation, to help absorb carbon dioxide and provide a cooling effect.

Partnerships with Environmental Organizations: Partnering with environmental NGOs can help schools implement broader environmental initiatives, such as tree planting campaigns and environmental awareness programs.

Action Plans : Schools can develop and implement climate action plans that outline specific goals, strategies, and timelines for reducing their carbon footprint. These plans can include energy audits, waste management and water conservation practices.

By integrating practical initiatives, educational programs, and community outreach, schools can lead by example in promoting sustainable practices. Through collaborative efforts, schools can contribute to a healthier, cooler, sustainable future.

Let's do it for a better tomorrow.....

Manisha Lashkari

principal
Pragati Secondary School
Railmagra, Rajsamand
manishalashkari.blogspot.com

जनता मालिक है, भिखारी नहीं

आज की बात की शुरुआत अपनी इक ग़ज़ल से करता हूं। खुद को खेवनहार कहने वाले देश की नैया को खुद डुबोकर कर भी अपने को मसीहा बताते हैं। शासक दल चाहे विपक्षी दल जब जनमत पाने की खातिर ऐसा जताते हैं। जैसे ये कोई दानवीर हैं और देश की जनता उनके रहमो करम पर आश्रित है और वोट देने से उसको कितनी सारी खैरात मिलेगी या वो देते रहे हैं, जबकि वास्तविकता बिल्कुल विपरीत है। कोई राजनेता कोई शासक जनता को कुछ भी नहीं देता है, बल्कि सत्ता पाकर खुद ये सभी बोझ बन जाते हैं और वो बोझ इनकी सुख सुविधाओं और नाम शोहरत की हसरत इस देश की जनता की खून पसीने की कमाई से होता है, जो दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है, जिसकी कोई सीमा ही नहीं है। एक एक कर विस्तार से चर्चा करते हैं। पहले जिस ग़ज़ल की बात की है, उसे पढ़ते हैं-

हमको ले डूबे ज़माने वाले
नाखुदा खुद को बताने वाले।
देश सेवा का लगाये तमगा
फिरते हैं देश को खाने वाले।
ज़ालिमों चाहो तो सर कर दो कलम
हम न सर अपना झुकाने वाले।
उनको फुटपाथ पे तो सोने दो
ये हैं महलों को बनाने वाले।
काश हालात से होते आगाह
जश्न-ए-आज़ादी मनाने वाले।
तूं कहीं मेरा ही कातिल तो नहीं
मेरी अर्थी को उठाने वाले।
तेरी हर चाल से वाकिफ़ था मैं
मुझको हर बार हराने वाले।
मैं तो आइना हूं बच के रहना
अपनी सूरत को छुपाने वाले।

चलिए थोड़ा ध्यान से समझते हैं ये सभी राजनेता हमको क्या ख़्वाब दिखला रहे हैं और क्या क्या एहसान जतला रहे हैं। आपको पेट भरने को दो वक़्त रोटी खिलाने की बात करते उनको शर्म से डूब मरना चाहिए। जब बड़ी बड़ी भव्य इमारतें, सड़कें, आधुनिक साधन और बेहद शाही ढंग से जीने को उनको मनचाहे ढंग से मिलता है। जनता की सेवा की आड़ में प्रतिनिधि बनकर। जनता देश की मालिक है, देश का खज़ाना उसी का है, जनप्रतिनिधि बनाया जाता है, समान वितरण करने को बड़े छोटे, अमीर गरीब का अंतर मिटाने को, न कि अमीर को और अमीर और गरीब को और गरीब बनाने की नीतियों को लागू करने को। खुद अपने लिए इतना अधिक उपयोग करना जिस से जनता को कुछ भी मिलने को नहीं बचे इसे लूट नहीं देश के साथ छल और अमानत में ख़यानत कहते हैं। सेवक को वेतन सुविधा मालिक से हज़ार लाख गुणा भला कैसे मिल सकता है। आपको कुछ सौ या कुछ हज़ार जीवन यापन करने को देना कोई उपकार नहीं लोकतांत्रिक समाजिक न्याय और समानता का कर्तव्य निभाना होता है और वो भी जनता से ही कितनी तरह से मिले करों आदि से न कि किसी दल या नेता की तिजोरी से। यकीन नहीं आए तो सभी राजनेताओं की नकद धनराशि, जायदाद, बंगले, गाड़ियां कितनी सम्पत्तियां बढ़ती सामने हैं, छिपी हुई की बात को छोड़ कर भी। अजब धंधा है, जिसे जनसेवा कहते हैं, जिसमें राजाओं सा जीवन आनंद पूर्वक बिताते हैं। फिर भी तिजोरी खाली नहीं होती और भी ठसाठस भरती जाती है। जनता को कभी छोटा सा घर बनाने को जगह या निर्माण को सामान भी मिलता है, तो उसका अधिकार भी आदर पूर्वक नहीं बल्कि ढिंढोरा पीटते हैं, कितने गरीबों की क्या सहायता की। जनता चुनाव में माई बाप लगती है, उससे भीख मांगते हैं, वोट की वादा करते हैं। देश की जनता की समस्याओं का समाधान करने का। कभी ईमानदारी से वादा निभाया गया होता तो आधुनिक सचिवालय, संसद भवन से पहले देश के हर नागरिक को रहने को घर, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करवाते। बुनियादी ज़रूरतें जनता को नहीं मिलती, तो उस आज़ादी का कोई महत्व नहीं रह जाता है, जिसमें शोषण, अन्याय और बेबसी जनता का नसीब है। देश को गुलामी से मुक्त करवाने को आज़ादी की लड़ाई लड़ने वालों का ये सपना तो कभी नहीं था। साधु का भेष धारण कर लुटेरे होते थे। कहानियों की बात क्या आज की कड़वी सच्चाई नहीं है। संविधान ने जनता को सभी अधिकार देने की बात कही है, मगर सरकारों ने नागरिक को उनके हक नहीं, बल्कि खैरात देने की बात कह कर लोकतंत्र का उपहास किया है। अभी बहुत कुछ बाक़ी है, कहने समझने को, लेकिन विराम देने से पहले इक अपनी ग़ज़ल और पेश करता हूं। टीवी चैनल पर विज्ञापन देकर शोर मचा रहे हैं कि हमने कितना दिया, कितना आपको मिलेगा, ये कितना बड़ा धोखा है, सेवक मालिक को खैरात बांटने की चर्चा कर क्या साबित करना चाहता है।

सरकार है बेकार है लाचार है
सुनती नहीं जनता की हाहाकार है।
फुर्सत नहीं समझें हमारी बात को
कहने को पर उनका खुला दरबार है।
रहजन बना बैठा है रहबर आजकल
सब की दवा करता जो खुद बीमार है।
जो कुछ नहीं देते कभी हैं देश को
अपने लिए सब कुछ उन्हें दरकार है।
इंसानियत की बात करना छोड़ दो
महंगा बड़ा सत्ता से करना प्यार है।
हैवानियत को ख़त्म करना आज है
इस बात से क्या आपको इनकार है।
ईमान बेचा जा रहा कैसे यहां
देखो लगा कैसा यहां बाज़ार है।
है पास फिर भी दूर रहता है सदा
मुझको मिला ऐसा मेरा दिलदार है।
अपना नहीं था, कौन था देखा जिसे
तनहा यहां अब कौन किसका यार है।

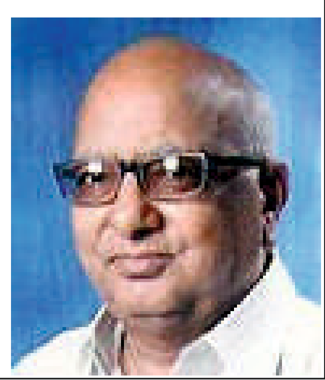

डॉ. लोक सेतिया
एससीएफ 30, मॉडल टाउन
फ़तेहाबाद (हरियाणा) 125050
मो. 9416792330

यादगार तकिया कलाम

मेरा गांव कांकरोली द्वारकाधीश की कृपा और उनके आशीर्वाद से सदा मस्त और मनमौजी प्रकृति का रहा है। यहां का बाशिन्दा लालच, बेर, भेदभाव व ईर्ष्या से परे रहकर मिलजुलकर रहने का आनन्द प्राप्त करता रहा और हमारे बुजुर्ग ऐसी ही मस्ती भरी खुन-नुमा जिन्दगी जी कर ईश्वर को प्यारे हो गये। आज हम ऐसे ही मस्त प्रकृति के दिवंगत आत्माओं के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने अपने तकिया कलामों से लोगों का मन मोहा और अपनी एक अलग छवि बनाई थी, जिसे लोग आज भी याद कर कर के उन्हें याद करते हैं।

स्व. बिहारी लाल जी उस्ताद (गौरवा)

मेरा गांव मेरे लोग में आपने उनके बारे में उनके अनेक कार्यो के बारे में बहुत कुछ जाना पर हम आज उनके तकिया कलाम के बारे में बताने जा रहे है। वे पहली राजसमन्द नगरपालिका के अध्यक्ष भी रहे थे और तात्कालिक सरकार के नेताओं से उनके अच्छे सम्बन्ध भी थे। अतः उनके पास कोई भी गांव के लोग किसी कार्य के लिए आता और कार्य के बारे में बताता तो वे बस फट से यही कहते **"भयो देख लुंगो"** यानि कोई भी हो वे सदा "भयो देख लुंगा" कहते थे। यहां तक कि घर के लोग भी कोई काम कहते तो बस उन्हें भी वही रटा रटाया "भयो देख लुंगा" कहते थे। भयो देख लुंगा उनकी जबान पर एक रटा रटाया वाक्य ही उनका तकिया कलाम भयो देख लुंगा हो गया।

स्व.नटवर लाल जी गौरवा

राजसमन्द नगरपालिका में चुंगी नाके के नाकेदार पद पर रहते हुए जब वे लोगों से बात करते तो **"है जो फिर"** अक्सर हर एक -दो मिनट में उनकी बातों में आ जाया करता था। आप सही सही कागजात बताओं नहीं तो "है जो फिर" मुझे आगे कार्यवाही करनी पड़ेगी "है जो फिर" बात यह है कि हमें भी आगे जवाब देना पडता है। "है जो फिर" उनके हर कहे गए वाक्यों में कई बार आता। "है जो फिर" में वहां गया, "है जो फिर" मैं वहां से आया तो है जो फिर है जो फिर बस यही तकिया कलाम "है जो फिर" उनका हो गया।

स्व. सोहन लाल जी साहू

उनके द्वारा कही गई बातों में लगभग 50 प्रतिशत **"मतलब"** यह है कि इसका मतलब क्या?। मतलब आप वहां गए। मतलब आपने उसको देखा, "मतलब" ये है कि उसने आपको **बुलाया, "मतलब"** ये है कि आप नहीं मानेंगे तो फिर आपको समझाने का क्या मतलब, मतलब मतलब के कारण ही आपका तकिया कलाम **"मतलब"** हो गया।

स्व. बलदेव जी मुखिया

वे हर बात को कहते हुए **"बराबर-बराबर"** बार -बार कहा करते थे। आप वहां गए "बराबर", आपने उसको देखा "बराबर", उसने तुम्हे वो चीज दी "बराबर", फिर तुम उस चीज को लेकर घर आए "बराबर", फिर तुम कह रहे हो वो चीज खो गई "बराबर", तो सवाल यह है कि वो चीज गई कहां बराबर। बराबर- बराबर, हर बात में **"बराबर"** कहने पर ही उनका तकिया कलाम "बराबर" हो गया।

स्व. प्यारे लाल जी सामरा

"केवारो मतलब यो है" यह उनका तकिया कलाम था। वे बडे ही

विनोदी स्वाभाव के व्यक्ति थे। राष्ट्रभक्ति व समाज सेवा में अग्रणी रहते थे गांव के हर कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति रहती थी। पर जब भी कोई बात करते तो हर एक-दो वाक्य के बाद उनकी बातों में **"केवारो मतलब यो है"**। केवारो मतलब यो है बार -बार दोहराते रहते थे। इसीलिये उनका तकिया कलाम **"केवा रो मतलब यो है"** हो गया।

स्व. कासम भाई न्यारगर

वे भी हर बात में **"बात इसमें ये है कि"** में वहां गया तो देखा चारो ओर जंगल ही जंगल है पर "बात इसमें ये है कि" जंगल में जंगली जानवरों का भी डर पर "बात इसमें ये है कि" डरने से कोई काम थोडे ही हो जाता है। "बात इसमें ये है कि" हिम्मत के बल पर ही आदमी आगे बढता है, पर "बात इसमें ये है कि" हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा, यानि इसमें "बात इसमें ये है कि" ये तकिया कलाम उनकी हर बात में हुआ करता था।

स्व. मनमोहन मुन्ना सरकार

"आ रे पट्ठे ये" जब भी किसी अपने से छोटे से नौजवानो को खेलते-कूदते देखते तो बरबस ही उनके मुख से "आ रे पट्ठे ये" हंसते हुए मुस्कुराहट के साथ निकल पडता था। अपनी मस्तानी चाल और मुस्कुराहट के वे धनी थे। वे खेल -कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम या अन्य कोई आयोजन सबमें उनकी भागीदारी रहती थी। धीरे-धीरे "आ रे पट्ठे ये" का दौर बहुत ज्यादा हो गया और वे अक्सर हर बात में "आ रे पट्ठे ये" कहकर गांव के लोगों में अपना तकिया कलाम "आ रे पट्ठे ये" के तकिया कलाम से मशहूर हो गए।

स्व. दौला बा

"मैं कियो रे भाई" उनका तकिया कलाम था। "मैं कियो रे भाई" असो काम मत कर। "मैं कियो रे भाई" थुं जारियो है तो म्हने भी लेतो जा। "मैं कियो रे भाई" थारी आ बात ठीक कोनी लागी। "मैं कियो रे भाई" थारे अणी वात उं कई लेना-देणों। "मैं कियो रे भाई" मैं कियो रे भाई हर बातचीत के पहले कहा करते थे और यहीं से **"मैं कियो रे भाई"** उनका तकिया कलाम बन गया था।

स्व. राम बाबू जी

स्वतंत्रता सेनानी सेवा भावी व अखाडे के उस्ताद रहे का तकिया कलाम **"माया ईश्वरी"** था। वे जब भी कोई होनी - अनहोनी घटना घटते देखते तो उनके मुंह से बस "माया ईश्वरी" निकल पडता था। किसी बच्चे को अच्छा दौडते देखते किसी बच्चे को अच्छा खेलते देखते तो बस यही कहते "माया ईश्वरी"। धीरे-धीरे "माया ईश्वरी" उनका तकिया कलाम हो गया। उनके मुंह पर "माया ईश्वरी" इस कदर चढ़ गया था कि वे हर बात में **"माया ईश्वरी"** का उच्चारण करने लगे थे। यहां तक कि उन्होंने अपने घर पर भी "माया ईश्वरी" लिखवा लिया था। इसलिए "माया ईश्वरी" उनका तकिया कलाम बन गया था।

स्व. रतु बा

"समज्या" हर वाक्य के बाद वे लोगों को कहते "समज्या"। काले मालनिया चौक में गवरी नाचेगा "समज्या"। अबे नहर खुलेगा और अबे कदी नहर खुलेगा और कदी पाणत करांगा "समज्या"। भुतालिया भूत में दौड लगाने धूलदार ही तो वैणो है "समज्या"। कहने का मतलब हर बात में अपना तकिया कलाम "समज्या" ही लगाया करते थे। इसलिए उनका तकिया कलाम **"समज्या"** हो गया।

ये सभी लोग ईश्वर को प्यारे हो गए, लेकिन उनके तकिया कलाम आज भी लोग याद करते हैं। उन सभी दिवंगत आत्माओं को याद करते हुए मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

राजसमंद जिले की खबरों से अपडेट रहने के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News
jaivardhannews.com
जयवर्द्धन NEWS

डॉ. गोपाल जी रा दूहा

छोरा नवी उछेर रा, दूणा करे धतंग।
मांझा री बदली करें, बदली करे पतंग।।

को गेले पग नी धरुं, बेटे लीदो नेम।
बापू बोल्या लाड का, मारे मन में भेम।।

आवो जावो थां कठे, बोलो नी भरतार।
ज्यूं थें लेवो सूचणा, मन्ने बी अधिकार।।

म्हारे आगे लो मती, कणी सोक रो नाम।
मूं रीसां री आकरी, करूं भड़ी को ठाम।।

जीं दन लाया बालमा, घर म्हें म्हारी सोक।
वो दन म्हारो आखरी, कै दूं छाती ठोक।।

थां केवो तो लेर मूं, आऊँ मूंगी कार।
भरता रीजो क़िस्त रा, पीसा थें सरकार।।

जे मोळा न मसमस्या, करें आपणी हूद।
ने माऊ रो केवड़ो, पीवे दूणो दूध।।

झटपट लावो सौक ने, घर में म्हारा राम।
थांरी सेवा रैण में, दन में म्हारो काम।।

मनखां ने लादो मजो, खोली परी लंगोट।
नी देखे वे आंकळी, नी देखे वे गोत।।
जंगळ न्हीं है लाडका, अतरी जिद मत टांड।
थूं कागद पे रूंखड़ा, नार चीतरा मांड।।

बेटे कीदो बाप रे, मर् या पाछे खेल।
उपज्या खेतां माइने, डाकी डाकी म्हेल।।

अबका गेला थूं सबी, जिनगाणी रा नाप।
चाल्यो जा रड़का मती, गाडी टापो टाप।।

गोरी थारो रूप यो, जाणे मीठो गोळ।
थूं केवे तो आज मूं, पी जाऊं घस घोळ।।

थारे कारण सूं पड़्यो, म्हारा मन में 'डेन्ट'।
फीतो ले ने नाप ले, करले मेजरमेन्ट।।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
वरिष्ठ आचार्य एवं राजभाषा संपर्क अधिकारी
आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर
मो. 9414342523

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सन-शाईन इंस्टीट्यूट
ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL
का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP,
PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705

"यह समय मामूली नहीं" बताने वाले वरिष्ठ कवि - स्व. नन्द जी चतुर्वेदी

स्व. श्री नन्द चतुर्वेदी जी की 21 अप्रैल 2024 को 101वीं जयन्ती थी। इसे उनके चाहने वाले उनके विचारों और उनकी कविताओं को सराहने वाले उन्हें श्रद्धा के साथ याद करते हुए राजस्थान के सभी साहित्यकार अपने अपने तरीके के साथ उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। राजस्थान साहित्यकार परिषद कांकरोली ने स्व. नन्द बाबू पर केन्द्रित संगोष्ठी रख उनकी कविताओं का पाठ व आलेखों का निचौड़ प्रस्तुत कर एक अनूठा प्रयास किया है, जो स्वागत योग्य है।

जन तंत्र के स्वागत में दिनकर जी ने लिखा था-

दो राह के रथ का घर-घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो की जनता आती है।

तो स्व. नन्द बाबू ने गणतंत्र पर हर भारतीय को मिलने वाले सम्मान की कल्पना करते हुए अपनी कविता में लिखा - यह देखो पहली बार धरा मुस्काती है। तुम तानों सीना, गर्दन झुकी करो सीधी। यह देखो जनता नए सुरों में गाती है।

स्व. नन्द बाबू की कविता पुस्तक "गा हमारी जिन्दगी कुछ गा" के लोकार्पण समारोह में मुझे भी शामिल होने का मौका मिला। उदयपुर के और आस-पास के क्षेत्रों के कई साहित्यकारों ने नन्द बाबू की इस पुस्तक पर अपने विचारों को रखा और सराहा। स्व. नन्द बाबू ने इस पुस्तक के पूर्व भी "यह समय मामूली नहीं", "ईमानदार दुनिया के लिये", "उत्सव का निर्मम समय", "वे सोये तो नहीं होंगे", "जहां उलाहने की एक रेखा खींची है" कविता संग्रह साहित्य जगत में स्व. नन्द बाबू की कविताओं का लोहा मनवा चुके हैं। क्रूर शाक्तियों की अविस्मरणीय घटना की तरह अपनी कविता में प्रस्तुत करने की कला स्व. नन्द बाबू में थी जैसे उत्सव के आतंक में। गांव के पतझड के पेड़ जैसा दरिद्र और निरूपुह हो गया है। औरतों के कंधो पर नंग-धडंग बच्चे बैठे हैं। वे थक गये हैं। उत्सव के एक दिन पहले। एक कविता में वे कहते है पराजय कब नहीं थी। कब नहीं थे झूठ के लिये वाह-वाह करने वाले। स्व. नन्द बाबू की एक ओर महत्वपूर्ण लम्बी कविता "सडक नदी नहीं है" में वे एक जगह कहते हैं "सडक जहां जुतों की रगड़"। लहु-लुहान पैर अपमान की दुर्घटनाएं है। वे जो यहां रख लेंगे पहचाने जायेंगे। अपने उत्साह व उमंग के लिये। पुरूष प्रधान परम्परा पर भी एक कविता में स्व. नन्द बाबू ने क्या खूब लिखा है- स्त्री का काम सेवा करना है। स्वागत करना है। चाय बनाना है। झाड़ू लगाना है। अपने बीमार चेहरे को चमकाना है। स्त्री का काम शांत रहना है। कबाड खाने का चीज होना है। पुरानी टुटी-फुटी लेकिन देखने लायक।

एक ओर कविता "मोबाइल वाली लडकी" भी आज के संदर्भ में दिल को छुने वाली कविता बन पडी है। स्व. नन्द बाबू ईमानदार कविता के एक ऐसे स्वर की झनकार थे, जिसकी गूंज युगो-युगों तक गूंजती रहेगी। समय से टकराना। सच्चाई से आंख मिलाकर बात करना और मनुष्य को सम्पूर्ण मनुष्य बनाने वाली सार्थक कविताएं समाज को देना ही स्व. नन्द बाबू का ध्येय रहा था और उन्होंने ऐसे ही समय के आर-पार की कविताएं लिखी थी। उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार, कांकरोली

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
डिजिटल राजस्थान, समृद्ध राजस्थान
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

व्यंग्य

ईवीएम बदनाम होने से बच गई

चुनाव परिणाम वाले दिन सुबह-सुबह फुलेरा पंचायत के प्रधान पद का आकांक्षी भूषण और उप प्रधान पद का आकांक्षी विनोद दोनों ही चाय की टपरी पर बैठ मोबाइल पर लोकसभा चुनाव का परिणाम देख रहे थे।

भूषण (खैनी रगड़ते हुए)- देख रहा है विनोद...'

विनोद (गर्दन उचकाते हुए)- आंय...

भूषण- ई बार एक्जिट पोल तो 400 पार का दावा कर रहा है, क्या लगता है तुमको एतना सीट आ जाएगा?'

विनोद- 'पता नहीं भैया, ई एग्जिट पोल तो आप जैसे पढ़े-लिखे लोग ही जानते होंगे, हमरा तो कुछ समझ में नहीं आता है। अब दावा कितना सही निकलेगा, ई तो शाम तक पता चल जाएगा। बाकी इस बार दावा तो हम और आप भी कर रहे हैं, उप प्रधान और प्रधान बनने का।

फिर खैनी को नीचले जबड़े में होंठ और मसूड़ों के बीच स्थापित कर दोनों मोबाइल पर मतगणना रिपोर्ट देखने में व्यस्त हो गए।

दोपहर में भूषण माथे से पसीना पोंछते हुए बोला- देख रहा है विनोद ई गर्मी... भले रिजल्ट 400 पार जाएं ना जाएं, ससुरा पारा 50 पार चला गया है। गमछा से पसीना पोंछते हुए विनोद बोला 'सही कह रहे हैं भूषण भैया, गर्मी तो नेता और अधिकारी से भी ज्यादा आतंक मचा रखा है। जब पेड़-पौधा काट कर एसी लगवाया जाएगा, तो गर्मी पड़ेगा ही न भैया! विनोद की बातों से सहमत भूषण ने गर्दन हिलाते हुए कहा- छः घंटा हो गया है, लेकिन परिणाम कुछ क्लियर नहीं हो पाया है और अभी तक ईवीएम के कैरेक्टर पर किसी ने ऊंगली भी नहीं उठाया है?

मासूमियत से विनोद बोला - अभी तक सबका रूझान ठीके-ठाक जा रहा है भैया, लगता है फायनल रिजल्ट का इंतजार कर रहे होंगे, उसके बाद ही ईवीएम को गरियाएंगे... तब तक एक-एक चाय और बोल दिया जाए। ई प्रचंड गर्मी में कितना चाय पीएगा मरदे, लाओ चुनौटी, खैनी ही बनाया जाए। भूषण ने मुंह बनाते हुए जवाब दिया।

देर शाम परिणाम घोषित होने के बाद भूषण बोला- जानता है विनोद अपने प्रधान मंजू देवी की तरह केंद्रीय चुनाव में भी नेता लोग काम करते नहीं है और कम सीट लाने पर आरोप ईवीएम पर लगा देते हैं।

सही कह रहे हैं भैया... लेकिन हमलोग जीतेंगे, तो क्षेत्र में काम करेंगे। विनोद गम्भीरता पूर्वक बोला। बिलकुल क्षेत्र में विकास का काम करेंगे, भूषण ने सहमति जताई।

विनोद (बीच में टोकते हुए),आप भी न भैया... विकास का काम विकास करेगा न! हम काहे करेंगे, उसका काम। अब विकास और सचिव जी का काम भी प्रधान और उप प्रधान करने लगे, तब तो हुआ...। भूषण (खिसियाते हुए) अरे एकदम से बकलोले हो का, विकास सहायक का काम नहीं, बल्कि विकास का काम करेंगे विकास मने डेवलपमेंट...।

तो ऐसे कहिए न... विनोद ने समझदारी दिखाई।

भूषण (मुस्कुराते हुए) 'लेकिन कुछ भी कहो इस बार के परिणाम ने सभी पार्टी को खुश होने का मौका दे दिया, चलो अब हम लोगों को भी अपने पंचायत चुनाव की तैयारी करनी है और मोबाइल भी चार्ज करना है। सही कह रहे हैं भैया इस बार सभे पार्टी खुश हैं और सबसे बड़का बात कि इस बार ईवीएम भी बदनाम होने से बच गई। आश्वस्त भाव से विनोद बेंच से उठते हुए बोला।

विनोद कुमार 'विक्की'
व्यंग्यकार, बिहार
मो. 7765954969

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

शक्ति स्पोर्ट्स

NIVIA VICKY COSCO SPORTS | FITNESS Reebok

सभी प्रकार की खेलकूद सामग्री मिलने का राजसमंद में एकमात्र विश्वसनीय स्थान

स्पोर्ट्स व GYM आइटम होलसेल रेट पर उपलब्ध है।

TLM सामग्री, दरी पट्टी, भोजन पट्टी, अग्निशमन यंत्र, लेक्टोमीटर, ट्रॉफी मोमेंटो, टी-शर्ट, लोवर, विज्ञान प्रयोगशाला, भूगोल प्रेक्टिकल सामग्री, पुस्तकालय की उपयोगी पुस्तकों सहित सभी प्रकार के सरकारी स्कूल की सामग्री उपलब्ध

शॉप नं. 10-11, शास्त्री मार्केट, कांकरोली जिला-राजसमंद
फोन नं. 02952-225137, 9414473275

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र

Tally, DTP, PGDCA

प्रवेश प्रारम्भ

पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

चालो लेण में, रेवो केण में

आपाणे देस रा मनख गेला चोराया पे घणी आगत करे। वाई लागे सोरा जणवा में बी अतरी आगत नी करता वेवेला। अतरी आगत भणाई न मेणत मजूरी में कीदी वेती तो अमरीको हा-धमण वेईन आपाणे पाछे टर्यो टर्यो फरतो । चोराया पे राती बती री गणती रा पांच सेकंड रेवे न पाछला इस्कूटर, मोटर साइकलां वाळा होरन वजाईन माथो चढ़ाई देवे। होरन अस्या जाणे कानड़ा पे कराड़ा वाया वे। अरे भले मनखे, आगे वाळा री आख्यां बी अरजुण री आंख ज्यों राती बत्ती पेईस अटकी लगी है। पग बरेक पे है न रेई-रेई न एक्सीलेटर रा झाटका लागी रिया है।

लीली बत्ती री वाट नाळी रिया हां दूजूं गेला वचमें ढबवा रो म्हाने बी सोक नी है भाया। थाणे ज्यूं म्हाणे बी घणा काम हल्ले लगावणा है। तो बी नराई जणा हरक्या-हरक्या ठेठ आगे आई जावे न राती बत्ती में बी पुलीस वाळा ने टोपी पेराईन भन्ना - भोट नाई जावे। वे आगे निकळी न काई न्याल नी करे। आगला चोराया पे राती लाइट पेईस उबा लादे। जदी नेम काइदा अळांगी न काई मोटमाई कीदी। वलई दूजा री मनई मन गाळ खादी।

नराई मनख उबी नन्दी जावा में हुंश्यारी हमजे। हंगळा जाई रिया वे वणी लेण में उल्टा जावा रो काई सांग। हूदा-हूदा चाल्या जावो तो कणी ने बी जोखम नी है। आपाणे हाथ-पग चाले जतरे गाड़्यां चलावणी है क नी? हाथ पग तोड़ाईन तो घड़ी में घरे बेवणो पांती आई सके। पछे गाड़्यां में तो बेई सको पण डरेवर वणवा री नेम गारन्टी नी है। गाड़्या तो लोड़ा लोखण री वना जीव री वे। मोचो पड़े तो हथोड़ा मेल्या न या रेट वी। वत्ती कांतराई वे तो रिसेल में झूनी देई न नवी लेई सको। पण डील रे मोचा पड़े तो नी हथोड़ा काम आवे नी रिसेल में नवो मनख मले। माथा पे हेलमेट रो जाब्तो पूरो राखणो चावे। है जो खोपड़ा री है। मगज विखर्यां केड़े जै सिया राम। सड़क सुरक्सा रो कोई हफ्तो नी वे। सुरक्सा तो घर बारणे पग मेलताई सरू वेई जाणी चावे। पगे चालो क मोटर में, आपाणी न दूजा री रक्सा रो धरम राखणो। चालाण री दरपणीऊं हांकड़ी हेर्यां मती हेरो। मरद वो तो गिलती करीन जरीबानो भरवा री बी छाती राखो।

सैर बी ये ईस है न गेला बी येईस है। कतरी बी भीड़ वो अणा गेला पेईस चालणो है। कण्डेई माथा पे पग तो नी देई सकां। हली मली न संप ऊं चालणो पड़ेला । म्हारी वातां याद राखजो सा । कदी मनखपणा री लेण पे चालता-चालता फेरू मलांला ।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
साहित्यकार व लेखक
वरिष्ठ आचार्य एवं राजभाषा संपर्क अधिकारी
आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर
मो. 9414342523

सन-शाईन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
RKCL का अधिकृत ज्ञान केन्द्र
Tally, DTP, PGDCA
प्रवेश प्रारम्भ
पुराना बस स्टैंड, ICICI बैंक के पास, केलवा
मो. 9649813798, 9950084705
फेक्ट्री चौराया, बस स्टैंड गांवगुड़ा मो. 9024034696

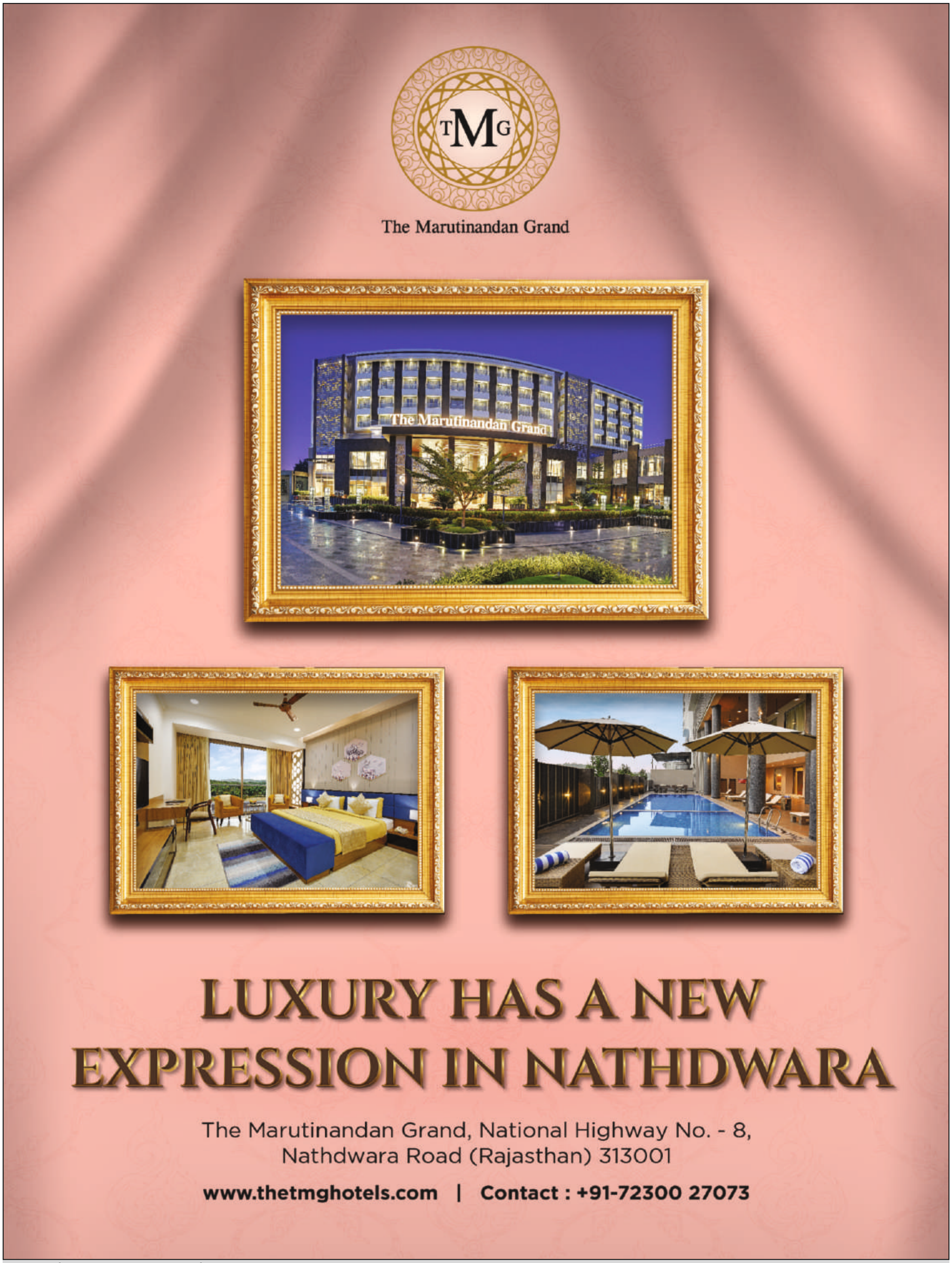
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

JAIVARDHAN NEWS
@jaivardhannews
लाखों लोग जुड़े, खुद देख लीजिए
पेम्पलेट की रेट में
विज्ञापन
पेम्पलेट छपवाने के बाद कितने लोगों
तक पहुंचे या न पहुंचे।
इसका कोई पता लगाना मुश्किल है।
Jaivardhan News
चैनल को रोज कितने लोग देख रहे हैं,
जिसे हर कोई देख सकते हैं।
पेम्पलेट छपाई व वितरण खर्च राशि की तुलना
काफी सस्ता है, सर्कुलेशन तो अनन्त है...।
Special
Offer
पहली बुकिंग
1000 रुपए
में 7 दिन एड
Offer L Shape Advt.
जयवर्द्धन
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901
To
YouTube jaivardhannews
jaivardhannews.com
liverajsamand
जयवर्द्धन